देश दर्शन

पूर्ण संख्या — ७६

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—स्थिति सीमा, तथा विस्तार ...	१
२—मानचित्र—दिल्ली ...	७
३—नगर ...	८
४—फ़ीरोज़शाह कोटला ...	१५
५—पुराना क़िला ...	१८
६—हुमायूँ का मक़बरा ...	२१
७—निज़ामउद्दीन की समाधि ...	२५
८—मोथ की मस्जिद ...	३०
९—सफ़दरजंग का मक़बरा ...	३२
१०—लोदी स्मारक ...	३६
११—सिविल लाइन्स ...	३९
१२—लाल क़िले की कहानी ...	४३
१३—कुतुबमीनार ...	५०
१४—कूवतुल-स्लाम-मसजिद ...	५३
१५—लालकोट (महरौली) ...	५५
१६—हौज़ खास ...	५७
१७—सिरी ...	५९
१८—विजयमंडल ...	६१
१९—तुग़लक़ाबाद ...	६३

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

दिल्ली नगर आधुनिक भारतवर्ष की राजधानी है। यह बड़ा प्राचीन नगर है। प्राचीन काल से आधुनिक काल के अन्तर्गत यह नगर प्रायः आठ बार उजाड़ा तथा बसाया गया। आधुनिक नगर शिल्पकला का एक अनोखा उदाहरण है। इस नगर का एतिहासिक वर्णन हमें ग्यारहवीं सदी से मिलता है। ग्यारहवीं सदी में महाराज अनंगपाल ने लालकोट का दुर्ग बनवाया था और राजधर्व का स्तम्भ दुर्ग के समीप स्थापित किया था। यह स्तम्भ ४०० वर्ष ईसा के पूर्व का है और धरातल के ऊपर इसकी ऊँचाई २३ फुट है। ३५ फुट यह धरती के भीतर गड़ा हुआ है। अनंगपाल के बसाये हुये नगर में ही अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज की राजधानी थी। यह नगर आधुनिक दिल्ली से दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है।

कुतुबउद्दीन गुलाम वंश का प्रथम सम्राट था उसने विजय प्राप्त करने के पश्चात नगर को मुसलमानी राजधानी में बदल दिया था जो आज कल प्राचीन दिल्ली के नाम से सम्बोधित किया जाता है। कुतुबउद्दीन ने एक मस्जिद और कुतुब मीनार बनवाया था। मस्जिद अब नष्ट हो गई है और केवल उसके खंडहर के रूप शेष रह गये हैं ये खण्डहर उसकी सुन्दरता तथा विशालता के परिचय रूप हैं।

कुतुब मीनार लगभग १२०० ई० में बनवाया गया था। तो भी आज वह बिलकुल नवीन प्रतीत होता है। इस मीनार

के अंतिम दोतल्ले फीरोज शाह ने १५० वर्ष बाद बनवाये थे। यह मीनार मस्जिद के ऊपर खण्डहरों के मध्य आकाश का चुम्बन करता हुआ प्रतीत होता है सचमुच ही यह संसारिक शिल्पकला का एक अदभुत नमूना है। यह स्तम्भ (मीनार) २३८ फुट ऊँचा है और स्वेत संगमरमर लाल बलुहे पत्थर का बना है।

कुतुबमीनार से तीन चार मील उत्तर पूर्व की ओर सिरी (नगर) स्थित है। इसे अलाउद्दीन ने १३०३ ई० में बनवाया था। इसकी दीवारें १९ फुट मोटी हैं। सिरी अब केवल खंड-हर के रूप में शेष रह गया है। आधुनिक दिल्ली के पूर्व की ओर तुग़लकाबाद का दुर्ग-नगर स्थित था। नगर की दीवार का कुछ भाग अब भी शेष रह गया। इस नगर के गयासउद्दीन तुग़लक़ ने बसाया था।

फीरोज़ शाह ने फीरोजाबाद शहर बसाया था। यह नगर प्राचीन दिल्लियों में सबसे बड़ा तथा आधुनिक नगर से बहुत समीप है। इस चौदहवीं सदी के नगर का केवल एक स्मारक अशोक की लाट शेष रह गया है। इस लाट को फीरोज शाह ने अपने महल के समीप लाकर स्थापित किया था।

आज का दिल्ली नगर अपने नाम के छोटे से प्रान्त का राजधानी है। दिल्ली प्रान्त का क्षेत्रफल ५७३ वर्गमील और जनसंख्या ६३६,००० है। दिल्ली नगर की जनसंख्या ४४७,००१ है। प्रान्त का शासन चीफ कमिश्नर के आधीन है।

दिल्ली-दर्शन

आधुनिक प्राचीन दिल्ली नगर को मुगल सम्राट शाहजहां ने १६३८ तथा १६५८ ई० के मध्य बसाया था। यह नगर तीन ओर एक सुदृढ़ ऊँची बालू बलुहे पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है। नगर की अधिकांश गलियां संकरी तथा छोटी हैं। नगर की प्रधान सड़क चांदनी चौक है। किसी समय में यह सड़क संसार की सर्वोत्तम धनी सड़कों में से थी। नगर की दीवार में कई एक बड़े द्वार हैं। पूर्व की ओर यमुना नदी और शाही महल है। शाही महल फोर्ट अथवा क़िला के नाम से प्रसिद्ध है। नगर में प्राचीन मसजिदें भारतीय तथा योरुपीय बस्तियां बसी हैं। नगर के बाहरी भाग में पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में भारतीय बस्तियां तथा उत्तरीय भाग में योरुपीय बस्ती है। जहां सुन्दर होटल, पार्क तथा वाटिकायें स्थित हैं।

प्राचीन काल से ही दिल्ली नगर की कला-कौशल भारत में प्रसिद्ध रही है। आज भी वहां भिन्न प्रकार के कलाकार वर्तमान हैं। चांदी, सोना, हीरा, मणि, पीतल, तांबा, हाथी दांत और लकड़ी, मिट्टी के बर्तन, शाल-दुशाले, तंजेब आदि के प्रसिद्ध कलाकार और चित्रकार अब भी वर्तमान हैं।

आधुनिक नगर से कुछ मील दक्षिण की ओर ख्वाजा निज़ामउद्दीन का समारक है। दिल्ली द्वार तीन मील की दूरी पर हुमायूं बादशाह का मक़बरा है। यह मक़बरा लाल पत्थर तथा श्वेत संगमरमर का बना हुआ है।

दिल्ली नगर की स्थिति बड़ी लाभप्रद है। यहां चारों ओर से गल्ला तथा दूसरा सामान आता है और फिर चारों ओर

अन्य अन्य स्थानों को भेजा जाता है। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण ही यहां योरुपीय तथा भारतीय व्यापारियों ने इसे अपना केन्द्र बना लिया है। यहां आटा पीसने, विस्कुट बनाने रुई धुनने, सूत कातने, ईख पेरने, लोहा तथा तांबा का सामान तयार करने आदि के बड़े बड़े कारखाने हैं।

शिल्प-कला की जिस कारीगरी के लिये दिल्ली संसार में प्रसिद्ध है वह वस्तुएँ प्रायः शाहजहां सम्राट के महल (फोर्ट) के भीतर स्थित है। द्वारों के अतिरिक्त किले की उत्तर से दक्षिण ३२०० फुट और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम १,६०० फुट है। किले के चारों ओर एक सुन्दर दृढ़ पत्थर को चहार दीवारी है। चहारदीवारी में बहुत से निकास द्वार हैं। प्रधान निकास द्वार चांदनी चौक के सामने है। किले में दीवाने-आम, रंग महल और दीवाने-खास देखने योग्य हैं। नगर का दूसरा प्रसिद्ध भवन जामा मस्जिद है। इस मस्जिद को भी शाहजहां सम्राट ने बनवाया था। इसके अतिरिक्त जैन मन्दिर, मोती मस्जिद आदि दूसरे भवन देखने योग्य हैं।

शाहजहां सम्राट के समय से आधुनिक दिल्ली का उत्थान प्रारम्भ हुआ था और औरङ्गजेब के समय यह नगर अपने शिखर पर पहुँच गया था। औरङ्गजेब की मृत्यु के पश्चात् सिक्ख और मरठे मुगल साम्राज्य से अलग हो गये। इन लोगों ने नगर को बड़ी क्षति पहुँचाई थी। उस समय मरठे लोग अंग्रेजों द्वारा परास्त कर दिये गये। अँग्रेजों ने दिल्ली पर

अधिकार जमा लिया। १८०३ ई० से यह नगर अँग्रेजों के आधीन हो गया।

१८५७ ई० में भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथय महान संहर्ष हुआ जिसे अँग्रेज इतिहासकारों ने गदर के नाम से प्रसिद्ध किया। उस समय दिल्ली पर पुनः भारतीय लोगों का अधिकार हो गया और बहादुरशाह दिल्ली की गद्दी पर सुशोभित किया गया पर कुछ समय के पश्चात् अँग्रेजों तथा भारती-अँग्रेजी सेना ने फिर भारतीयों के हाथ से नगर छीन लिया और तब से अब तक दिल्ली पर अँग्रेजों का अधिकार है।

१९११ ई० में दिल्ली में सम्राट जार्ज पञ्चम ने दरबार किया। सम्राट तथा समाज्ञी क्वीन मैरी भारत पधारे और उनके भारत के सम्राट तथा महारानी होने की घोषणा की गई। दिल्ली भारत की फिर से राजधानी बनाई गई। अँग्रेजों ने नगर अपनी कला के अनुसार आधुनिक रंग में बदल दिया है और नगर की अच्छी उन्नति हुई है।

नवीन दिल्ली का निर्माण कार्य अंग्रेज़ों ने १९१२ ई० में आरम्भ किया और साम्रम दिल्ली से पांच मील दक्षिण की ओर नगर बनाने का स्थान चुना गया। नगर के बनाने में २००,००० भारतीय मजदूर लगाये गये थे। फरवरी सन् १९३१ ई० में लार्ड इर्विन ने नगर की पूर्ति कर उसका उद्घाटन किया।

आधुनिक दिल्ली नगर की विशाल सड़कों के दोनों ओर वृक्षों की पंक्ति लगाई गई है। और विशाल भवन बनाये गये हैं। वाइसराय-भवन एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर

बनाया गया है। वाइसराय-भवन का तांबे का स्तम्भ दरबार-हाल के ऊपर निर्माण किया गया है। स्तम्भ की ऊँचाई १७७ फुट है। प्रधान प्रवेश मार्ग के सामने सम्राट जार्ज पञ्चम और सम्राज्ञी क्वीन मैरी की दो मूर्तियां स्थापित हैं। भवन के पीछे एक विशाल बाटिका मुग़ल-कला पर बनाई गई है।

वाइसराय भवन के सामने वाइसराय-कोर्ट है। इसकी लम्बाई १,३०० फुट और चौड़ाई ६०० फुट है। यह जलाशयों, फव्वारों, सुन्दर फूल पत्तियों, घासों और छोटे निचले वृक्षों से सुशोभित किया गया है। मध्यवर्ती भाग में जयपुर-स्तम्भ स्थापित है। आगे सम्राट-मार्ग (किंग्सवे) है जिसके दोनों ओर सरकारी सेक्रेटरियट भवन बने हैं।

दिल्ली का कौंसिल भवन बड़ा ही दर्शनीय है यह बृताकार रूप में बनाया गया है। इसमें लेजिस्लेटिव असेम्बली, कौंसिल आफ स्टेट और चैम्बर आफ प्रिंसेज तीनों स्थिति हैं।

दिल्ली-दर्शन

मानचित्र-दिल्ली

म्यूटिनी मेंमोरियल (विप्लव स्मृति), रिज सड़क, सब्जी मंडी स्टेशन पश्चिमी यमुना नहर, कुदसिया सड़क, सरकुलर सड़क, काश्मीर द्वार, युनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय), यमुना नदी, सेंटजेम्स का चर्च मोरी द्वार, हमिल्टन सड़क, हमिल्टन स्टेशन जनरल पोस्ट आफिस, क्वीन्स सड़क, काबुल द्वार, बड़ा बाज़ार, फतेहपुरी मसजिद टाऊन हाल, लोधियन सड़क, चांदनी चौक, लाहौर द्वार, बेला सड़क, सलीमगढ़, एलगिन सड़क, क़िला, दिल्ली, जैन मन्दिर, खास सड़क, एस्प्लांडे रो, फैज़ बाज़ार, चितलीकावर सड़क, काली मसजिद, सीताराम बाज़ार, बड़ी मसजिद, बिल्ली मारन सड़क, क्लाक़टावर, लालकुवा सड़क, कृष्णगंज स्टेशन, लाहौर द्वार म्यूटिनी मेमोरियल सड़क, ग़ाज़ी ख़ां का मक़बरा, नवीन दिल्ली स्टेशन, अजमेर द्वार, पहाड़गंज, सरकुलर सड़क, तुर्कोमन द्वार, अशोकलाट, जेल, फीरोज़ाबाद, रिफार्मेटरी, जी० आइ० पी० रेलवे, आगरा और बम्बई को। कोनाटप— , पंच, क्विन सड़क, लेडी हार्डिंज तथा कलः स्पताल, लेडी हार्डिंज सड़क, लोअर रिज सड़क, पार्कला मौद सड़क, इबेटसन सड़क, मार्केट सड़क, बैंडसड़क, कनटोनमेंट सड़क रावर्ट स सड़क, साउथ अवेन्यू, नार्थ अवेन्यू, ताल्कातोर सड़क, अलेन्बी सड़क, महादेव सड़क, क्वीनमैरी का अवेन्यू, रायसिना पहाड़ी, लेजिस्लेटिव भवन, सेक्रेटैरियट ; किंग्स मार्ग क्वीन विक्टोरिया सड़क, विंडसर महल, कनोनिंग सड़क, फीरोज़ शाह सड़क, बड़ी कालेज गली,

कर्ज़न सड़क, राजकुमारी महल, वारमेमोरियल मेहराब, पृथ्वी राज सड़क, पंड्रा सड़क, औरंगज़ेब सड़क, अल्बूक़र्क सड़क, हेस्टिंग सड़क, कुतुब सड़क, अकबर सड़क, बादशाह जार्ज अवेन्यू, कुशक सड़क, डूप्ले सड़क, किंगएडवर्ड सड़क, क्लाइव सड़क, नवीन दिल्ली, पुराना क़िला।

नगर

दिल्ली नगर ऐतिहासिक स्थानों तथा स्मारकों से भरा पड़ा है। मसजिदें, महल, मकानात, सराएं, गलियां और वाटिकाएँ आदि सभी पुरानी स्मृतियां हैं जो हमें प्राचीनकाल से अब तक की सुधि दिलाती हैं। इसी नगर में भारतवर्ष की प्रसिद्ध घटनाएँ घटी हैं। हम जानते हैं कि महाभारत का भीषण संग्राम इसी दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के मैदान में हुआ था। पानीपत की तीनों प्रसिद्ध लड़ाइयां इसी नगर के समीप हुईं। प्रधान भारतीय शासकों, महाराजाओं का उत्थान अथवा सर्वनाश इसी नगर में हुआ। इसी नगर में भारत की प्रसिद्ध घटनाएं घटीं जिनका भारत के इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा।

शाहजहां बादशाह ने दिल्ली में आकर अपने नाम पर शाहजहानाबाद बसाया और तीन बड़ी सड़कें बनवाईं। प्रथम सड़क चांदनी चौक है। यह सड़क शाही जुलूस के मार्ग के लिये बनाई गई थी। इसी सड़क से होकर शाहजहां और औरंगजेब सज-धज के साथ निकला करते थे। इसी सड़क

पर दाराशिकोह एक बन्दी की दशा में घुमाया गया था। इसी सड़क पर नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली का विजय-उत्सव मनाया गया था। इसी सड़क पर माधोरावसींधिया, तथा गुलाम क़ादिर रोहेला के जीत की खुशी मनाई गई थी। १९१२ ई० में जब लार्ड हार्डिंग ने दिल्ली में प्रवेश किया तो भी चांदनी चौक में ही धूमधाम से जुलूस निकाला गया था। चांदनीचौक संसार की प्रसिद्ध प्रधान ऐतिहासिक सड़कों में से मुग़ल राजों के समय में इस सड़क के मध्य होकर एक नहर बहती थी दूसरी बड़ी सड़क शाहजहां ने दिल्ली क़िला के दिल्ली द्वार से जामा मसजिद तक और सड़क क़िले के दिल्ली द्वार से नगर के दिल्ली द्वार तक बनवाई थी। मसजिद वाली सड़क होकर मुग़ल राजे जामा मसजिद में नमाज पढ़ने जाते थे। यह सड़क और इसका बाज़ार विप्लव काल में नष्ट कर दिये गये थे।

दिल्ली नगर की दीवारों को शाहजहां ने बनवाया था जिनकी मरम्मत अंग्रेज़ों ने कराई। जहां कहीं दीवार नहीं है वहां उसके स्थान पर सड़क है। दीवार में स्थान स्थान पर बुर्ज़ या मीनारें और द्वार बने हुये हैं। बुर्ज़ों पर नगर की रखवाली करने वाले सिपाही चौकीदारी किया करते थे और कोई भी व्यक्ति नगर में प्रवेश न कर पाता था। दीवार में गोली चलाने के लिये भी मार्ग बनाये गये थे। दीवार के प्रवेश-द्वारों से ही लोग नगर में आ-जा सकते थे। काश्मीर तथा लाहौर द्वार के उत्तर की ओर विप्लव काल में लड़ाइयां हुईं और जब १८०४ ई० में मरहठों ने दिल्ली पर आक्रमण किया तो दिल्ली और अजमेर द्वार के दक्षिण युद्ध हुआ था।

देश दर्शन

दिल्ली में अरबी का एक मुग़लकाल का प्राचीन मदरसा (पाठशाला) है जिसे अब ऐंग्लो-अरेबिक कालिज कहते हैं। इसकी नीव प्रथम निज़ाम के पिता ग़ाज़ी उद्दीन ने डाली थी। ग़ाज़ीउद्दीन की समाधि कालेज में बनी है। अरबी पाठशाला से यह ओरयंटल कालेज हुआ उसके पश्चात् पुलिस थाना और हाई स्कूल हुआ और अब फिर अरबी कालेज हो गया है। बुलबुली खां मुहल्ला में सुल्तान रज़िया की क़ब्र है।
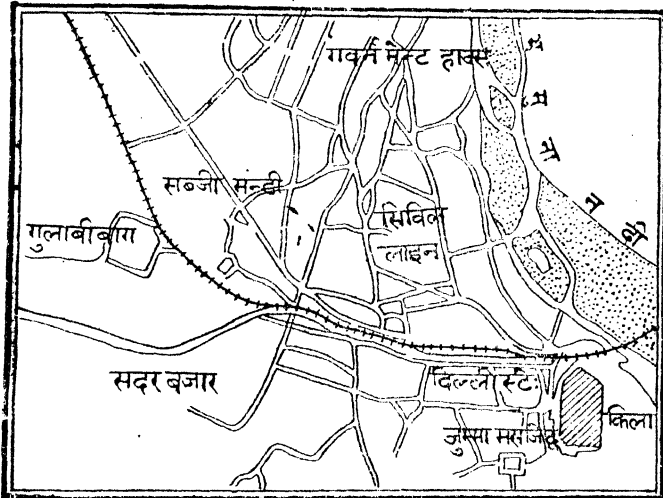
दिल्ली नगर और समीपवर्ती प्रदेश

दिल्ली नगर में उन्नीसवीं शताब्दी में भी प्रसिद्ध भवन बनाए गये। इन्हीं में से लाएड जार्ज बैंक है। यह चांदनी

चौक में है। प्राचीन समय में यह सरधना की बेगम समरू का महल था। यह इम्पीरियल बैंक के समीप ही स्थित है।
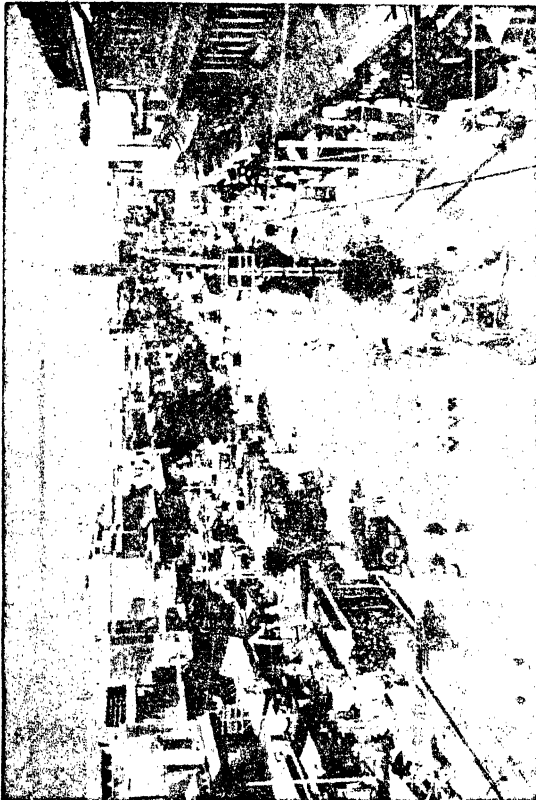
दिल्ली का चाँदनी-चौक

बैंक को अँग्रेजों ने यूनानी ढंग पर बनवाया है परन्तु इसका हाल बड़ा (बड़ा कमरा) शाही समय का बना हुआ है।

काश्मीरद्वार केलोधियन वृज (पुल) से आगे बढ़ने पर कुछ प्राचीन भवन मिलते हैं। यहां जो शिलालेख है उसे पढ़ने से पता चलता है कि काश्मीर द्वार शायद गोला तथा बारूद घर का द्वार था। गोला-बारूद भवन १८५७ ई० में उड़ा दिया गया था। उसके आगे गवर्नमेंट हाई स्कूल है। यह स्कूल दारा शिकोह के महल में स्थित है। १८०३ ई० में यहां ब्रिटिश रेज़ीडेंसी
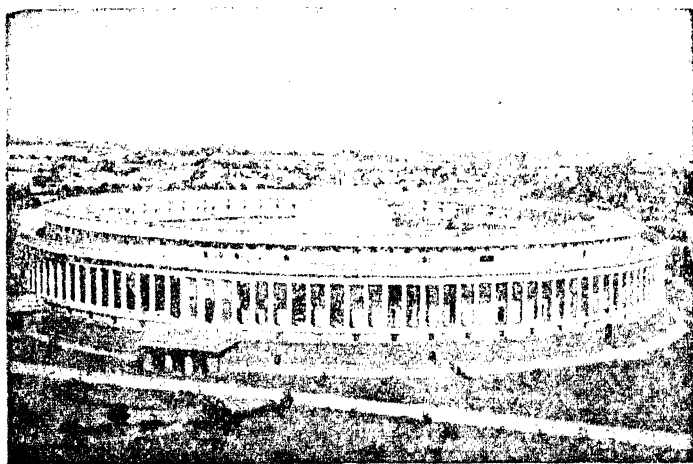
नई दिल्ली का सभा भवन

बनाई गई और लार्ड मेटकाफ तथा सरडेविड आक्टरलोनी यहां रहते थे। और आगे चलने पर साधु जेम्स का गिरजाघर है। इसको कर्नल जेम्स स्किनर ने बनवाया था जो दौलतराव सींधिया के यहां नौकर था। जब सींधिया और अंग्रेज़ों से

युद्ध हुआ तो स्किनर ने सींधिया की नौकरी छोड़ दी और अंग्रेजों के साथ मिल गया। इसने स्किनर्स-हार्स नामक रेजीमेंट
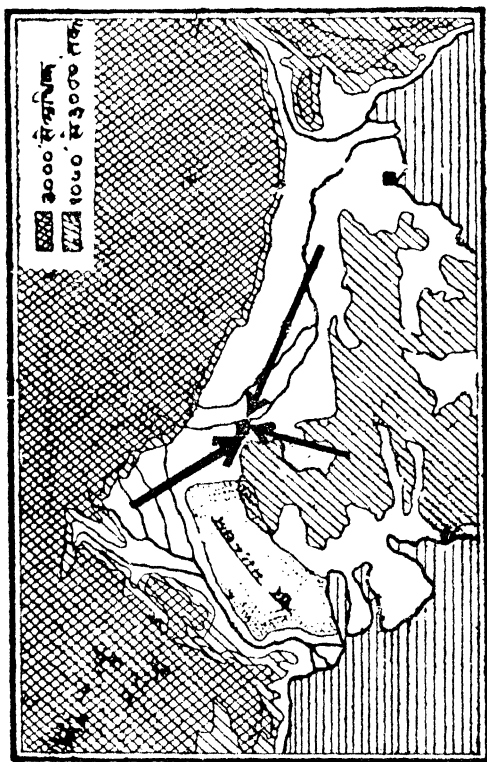
दिल्ली की महत्वपूर्ण स्थिति को सूचित करने वाले भारतवर्ष के तीन प्रधान मार्ग

बनाई थी। स्किनर्स ने सेन्टपाल गिरजाघर लन्दन की नक़ल का एक चर्च बनवाया था।

इस चर्च के सामने हिन्दी कालेज है। यह कालेज पहले कर्नल स्किनर का निवास स्थान था। नगर में बहुत से प्राचीन भवन हैं जिन्हें प्रसिद्ध व्यक्तियों ने मुग़ल समय में और हिन्दू शासन काल में बनाए थे। नगर के बाहर रौशन आरा बाटिका है जिसे शहज़ादी ने बनवाया था। शहज़ादी की समाधि बाटिका के भीतर ही है। सदर बाज़ार से लेडी रीडिङ्ग हेल्थ स्कूल को एक सड़क जाती है। इसे चर्ल्स ट्रेवेलियन ने बनवाया था।

नगर से कुछ दूर पर हरिजन-कालोनी (बस्ती) है। पहले यह बस्ती बड़ी गन्दी थी। यहां प्रायः भङ्गी लोग रहा करते थे और इतनी गन्दगी थी जिसे नरक से तुलना दी जा सकती है। हरिजन-बस्तियां तो कई एक हैं पर अब श्रद्धानन्द बाजार, सुईबाला और अजमेरी दरवाजे की बस्तियों में देश के महान व्यक्तियों की कृपा दृष्टि पड़ने से सुधार हो गया है और अब यहां पक्के मकान बन गये हैं। महात्मा गांधी अभी हाल ही में जब मन्त्री-दऊ द्वारा निमन्त्रित किये गये थे तो वह हरिजन-बस्ती में ही हरिजनों के मध्य ठहरे थे। हरिजन बस्ती में अब ऐसे स्थान बन गये हैं जिन्हें लोग देखने के लिये जाते हैं और देखने योग्य हो गये हैं। हरिजन बस्ती में घनश्यामदास बिड़ला ने श्री लक्ष्मीनारायण जी का एक बड़ा सुन्दर मन्दिर अभी हाल ही में बनवाया है। यह मन्दिर भारतवर्ष की प्रमुख तथा प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। यह बड़ा सुन्दर है। मन्दिर में आधुनिक कला तथा प्राचीन शिल्पकला का मिश्रण है। मन्दिर मुख्यतः

हरिजनों को प्रयोग के लिये बना है पर वहां सभी लोग दर्शन हेतु जाते हैं। इस मन्दिर के बन जाने से और अच्छे भवनों के बनने के कारण अब लोग हरिजन बस्ती का भी निरीक्षण करने जाते हैं। प्रायः प्रमुख राजनैतिक नेता हरिजन बस्ती में ही निवास करते हैं।

फीरोज़ शाह कोटला

फीरोज़ शाह तुग़लक़ वंश का अंतिम सम्राट था। इसने १३५१ ई० से १३८८ ई० तक राज्य किया था। तुग़लक़ वंश का प्रथम सम्राट गयाउद्दीन ने तुग़लकाबाद नगर बसाया था। इस वंश के दूसरे सम्राट मोहम्मद शाह ने क़ुतुब के समीप एक महल बनवाया था जिसे अब विजय मंडल कहते हैं। मोहम्मद तुग़लक़ ने दिल्ली छोड़ कर दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाई थी पर बाद में नागरिकों की अप्रसन्नता के कारण दिल्ली को फिर बसाया था। मोहम्मद की मृत्यु के पश्चात् फीरोज़ शाह उसका भतीजा गद्दी पर बैठा।

फीरोज़शाह चतुर राजा था और शान्तिप्रिय था उसने एक नहर खोदवाई थी। अब इस नहर का नाम पश्चिमी यमुना नहर है। यह नहर कर्नाल के समीप यमुना से निकाली गई है। इसकी एक शाखा दिल्ली को आती है और दूसरी हिसार और सिरसा को जाती है। अब की अपेक्षा तुग़लक काल में यह नहर अधिक चौड़ी थी। नहर के ऊपर फीरोज़शाह का बनवाया

हुआ घाट है। दिल्ली वाली शाखा की मरम्मत शाहजहां के समय में अलीमर्दन खां ने कराई थी इसी कारण नहर का नाम अलीमर्दन नहर पड़ गया है। अहमदशाह अब्दाली के समय यह नहर नष्ट कर दी गई थी। १८२० ई० में अंग्रेजों ने इसकी पुनह मरम्मत कराई।

फीरोज़शाह को मकान बनाने की बड़ी चाह थी इसलिये यमुना के तट पर सुन्दर ठंडी वायु सेवन के लिये उसने फीरोज़ शाह कोटला नामक महल बनवाया जिसे फीरोजाबाद के नाम से प्रसिद्ध किया। प्रवेश द्वार से भीतर जाने पर जो बड़ा खुला मैदान मिला है यह उस समय राज-महल का वह भाग था जहां साधारण प्रजा एकत्रित होती थी। दाहिनी ओर प्रजा तथा राजा के प्रयोग हेतु बड़े कमरे बने हुये हैं। बड़े मैदान की बांई ओर एक गहरी बावली है जहां राजा ग्रीष्म ऋतु में स्नान तथा आराम करता था।

राजमहल के दूसरी ओर एक बड़ी मसजिद है। मसजिद के समीप एक भवन बना है जिसके ऊपर एक स्तम्भ है। इस भवन का प्रयोग राजा अपने लिये करता था। यह स्तम्भ सम्राट अशोक का स्तम्भ है। इसे अम्बाला के समीप सम्राट अशोक ने २५० वर्ष ईसा के पूर्व स्थापित कराया था। एक बार जब फीरोज़शाह शिकार खेलने गया था तो उसने इस लाट (स्तम्भ) को देखा वह प्राचीन स्मारकों को बहुत पसंद करता था इसलिये उसने लाट को दिल्ली में स्थापित करने की इच्छा की। ४२ पहियों की गाड़ी में यह स्तम्भ दिल्ली लाया गया। इसे खींचने के लिये

हज़ारों मनुष्य लगाये गये थे। इस स्तम्भ की चोटी पर एक स्वर्ण-शिखा थी पर यह शिखा उस समय नष्ट कर दी गई जब अठारहवीं शताब्दी में मरहठों और जाटों ने दिल्ली नगर को विध्वंस किया था। अशोक स्तम्भ पर पाली भाषा में सम्राट अशोक की घोषणाएं अंकित हैं। लाट के समीप खड़े होकर यमुना नदी की ओर दृष्टि डालने पर पता चलता है कि यमुना दूर हैं पर तुग़लक़ काल में यमुना फीरोज़शाह के राज-महल की दीवारों से टकराकर बहा करती थीं।

हौज़खास के समीप फीरोज़शाह ने अपना मक़बरा बनवाया था। इसी के समीप फीरोज़ ने अरबी की पाठशाला स्थापित की थी आज कल यह यूनिवर्सिटी अथवा विश्वविद्यालय है।

फिरोज़शाह के राजमहल के चारों ओर एक बड़ा नगर बस गया था जिसका नाम फिरोज़ाबाद था। कलामसजिद फीरोज़शाह नगर का ही अंग है। तैमूर के आक्रमण के बाद नगर नष्ट हो गया था क्योंकि नगर की रक्षा के लिये कोई दीवार नहीं बनाई गई थी।

पुराना क़िला

पुराना क़िला इन्द्रप्रस्थ नामक प्राचीन नगर के राज-महल के स्थान पर बना है। इन्द्रप्रस्थ प्रथम दिल्ली नगर था। यहाँ कौरवों और पांडवों की राजधानी थी। द्वापर युग में यह नगर सर्व प्रथम बसाया गया था। इससे सिद्ध है कि दिल्ली नगर की सर्व प्रथम नीव द्वापर में पड़ी थीं। महाभारत काल के दूसरे पाण्डव नगर बाग़पत, सोनपत, तिलपत और पानीपत का पता तो है पर इन्द्रप्रस्थ का पता नहीं है। अतः सिद्ध है कि उसी के स्थान पर दिल्ली नगर बसा है। प्राचीन काल के इन्द्रस्थ का कोई चिन्ह शेष नहीं रह गया है। यदि महाभारत काल का विचार किया जाय और उस समय की घटनाओं की ओर ध्यान दिया जाय तो आँखों के सामने महाभारत काल के राजदरबार और रण-स्थल का एक चित्र खिंच जाता है। कदाचित कुरुक्षेत्र के रण-स्थल में जाने वाले योधा बर्तमान वार-मेमोरियल आर्च के मैदान हो कर ही गये होंगे। बर्तमान पुराना क़िला हुमायूं बादशाह का बनवाया हुआ है यह १५३० ई० में बना था। हुमायूं मुग़लबंश के हेतु एक नवीन राजधीनी बनाना चाहता था। इसलिये बाबर की मृत्यु हो जाने के पश्चात् वह दिल्ली आया और राजधानी के लिये स्थान का निरीक्षण किया। वर्तमान निजामउद्दीन स्टेशन के समीप होकर उस समय यमुना जी बहती थीं। हुमायूं ने एक नगर बसा दिया था। उसी नगर का एक द्वार खूनी-दर्वाज़ा जेल के सामने अब भी शेष है।

दिल्ली-दर्शन

हुमायूं ने पुराना क़िला और नगर का निर्माण कार्य समाप्त नहीं कर पाया था कि शेरशाह सूरी ने उसे पराजय कर दिया। शेरशाह से हार कर हुमांयू फारस भाग गया। शेरशाह भारत-सम्राट बन गया और पाँच वर्ष तक शासन किया। शेरशाह ने ही पुराना क़िला और नगर बनाने का कार्य समाप्त किया। इसी कारण पुराने क़िला के भीतर के भाग शेरशार के नाम से प्रसिद्ध हैं।

यदि हम मथुरा जाने वाली सड़क के द्वार से पुराने क़िले में प्रवेश करें तो क़िले के मध्य में हमें एक बहुत गहरा कुवां मिलेगा। इस कुएं को हुमायूं सम्राट ने बनवाया था जिससे क़िले को सदैव पानी मिलता रहे। यह कुवां बहुत अधिक गहरा है क्योंकि क़िला एक पहाड़ी पर बना हुआ है कुएं के आगे बाईं ओर एक मसजिद है। यह शेरशाह की मसजिद है यह दिल्ली नगर की प्रसिद्ध मसजिदों में से है और बड़ी सुन्दर बनी है। इसमें भांति-भांति के रंग-विरंगे लालश्वेत, भूरे और काले पत्थर लगे हुये हैं।

पुराना क़िला के भीतर दूसरा भवन शेर-मंडल है। यह भवन अष्टभुजाकार है। इसकी छत पर जाने के लिये बहुत ही सीधी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इसे भी शेरशाह ने बनवाया था।

शेरशाह की मृत्यु के पश्चात् हुमायूं फिर लौटा और १५५५ ई० में उसने अपने साम्राज्य पर फिर अधिकार कर लिया। उसने दिल्ली को फिर अपनी राजधानी बनाया। हुमायूं ने शेरमंडल को अपना पुस्ताकालय बनाया। वह इसी स्थान पर अपने विद्वानों से शास्त्रय किया करता था। १५५६ ई० में एक
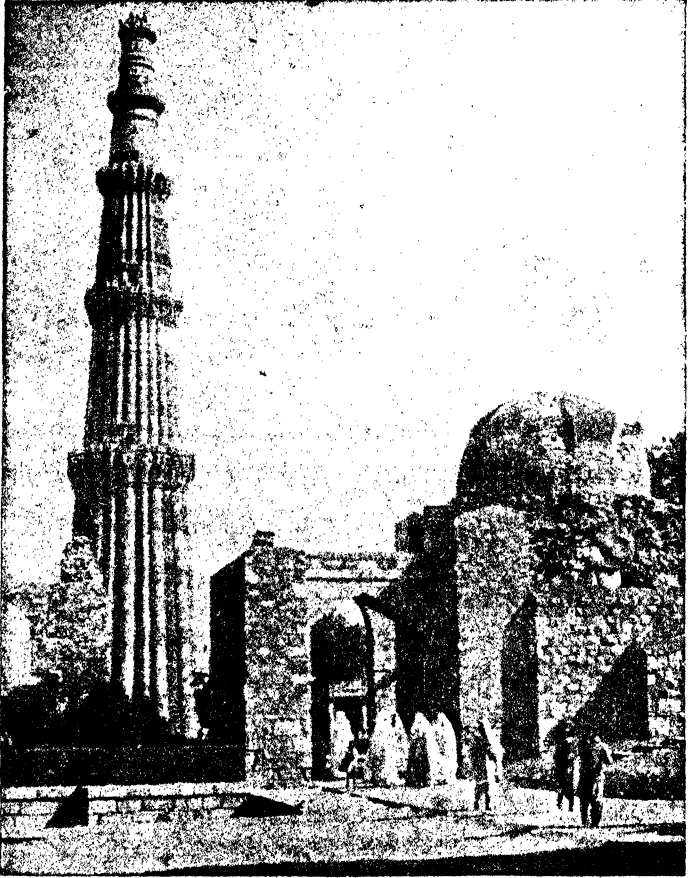
कुतुब मीनार और पृथ्वीराज का क़िला

दिन संध्या समय हुमायूं शेर-मंडल की छत पर बैठा हवा खा रहा था। नमाज़ की अज़ान सुन कर वह जल्दी से नीचे उतरने लगा। उसी समय एक सीढ़ी टूट गई और बादशाह गिर गया। बादशाह को बड़ी चोट लगी और उसी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। पत्थर की टूटी हुई सीढ़ी अब भी वैसा ही बनी है।

शेरशाह मंडल और शेरशाह मसजिद के मध्य ईंट के बने हुये कुछ मकानात हैं यह शाही हम्माम (स्नान-गृह) के शेष भाग हैं।

पुराना क़िला के द्वारों की चित्रकारी तथा शिल्पकला बड़ी सुन्दर बनी है और उसमें रंगबिरंगे पत्थरों का प्रयोग किया गया है। पुराना क़िला के बाहर एक मसजिद तथा कालेज (मदरसा) है। इसे अकबर की मां महम अंगा ने बनवाया था।

हुमायूं का मक़बरा

मुग़ल स्मारकों में हुमायूँ की समाधि एक बड़ी प्रसिद्ध तथा सुन्दर समाधि है। इसके चारों ओर अच्छे अच्छे भवन बने हुये हैं। इसी के समीप निज़ामउद्दीन की समाधि है जिसका दर्शन करने के लिये बहुत से लोग जाते हैं। सम्राट अकबर की माता हमीबानूबेगम ने अपने पति हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् १५६५ ई० में हुमायूँ के मक़बरे को बनवाया था। यह स्थान शाहजहांनाबाद से ६ मील की दूरी पर स्थित है पर मुग़ल समय में यह स्थान दिल्ली नगर के ठीक बाहरी भाग में स्थित

था। अधिकांश लोग जब दिल्ली से अकबर की आगरा वाली ग्रैंडट्रंक सड़क हो कर आगरा को प्रस्थान करते थे तो प्रथम रात्रि इसी मक़बरे में व्यतीत करते थे।

यदि आजकल हम हुमायूं की समाधि का अवलोकन करने के लिये जावें तो सब से पहले हम उस समाधि पर पहुँचेंगे जिसका गुम्बद नीले रंग का बना हुआ है। इसके चारों ओर सड़क एकवृत बनाती है। यह गुम्बद फारस के खण्डों का बना है। मुग़लों के आने के पूर्व दिल्ली निवासी इन नीले खण्डों के बारे में बिल्कुल नहीं जानते थे। मुग़ल लोग अपने साथ इन खण्डों को ले आये और नए फैशन की बुनियाद डाली।

जब हम हुमायूँ की समाधि की ओर घूमेंगे तो हमें दाहिनी ओर एक हाता मिलेगा जिसमें एक समाधि तथा मसजिद है यह ईसा खां की मसजिद तथा समाधि है ईसा खां हुमायूं का सरदार था और हुमायूं के दिल्ली लौटने के कुछ वर्ष पहले उसकी मृत्यु होगई थी। यह समाधि बड़ी ही सुन्दर है पर हुमायूं की समाधि से बहुत भिन्न है।

हुमायूं की समाधि में हम सर्व प्रथम एक मेहराब मार्ग से प्रवेश करते हैं और आगे चलकर दूसरे द्वार में प्रवेश करते हैं। यह मेहराब हुमायूं की समाधि का मुख्य प्रवेश द्वार नहीं है। यह एक मुग़ल सरदार की बाटिका का एक अंग है। बाटिका अब नष्ट हो गई है। मार्ग से आगे बढ़ने पर दाहिनी ओर हमें एक दूसरा मेहराब मिलेगा। यह अरब सराय का प्रवेश मार्ग है। इस सराय में लोग दिल्ली से आगरा जाते

समय विश्राम किया करते थे। अरब सराय को १५६०-६१ ई० में हमीदा बानू बेगम ने उन ३०० अरबों के हेतु बनवाया था जिन्हें वह मक्का से अपने साथ लाई थीं। प्रवेश द्वार के भीतर बहुत से खंडहर तथा क़ब्रें हैं।

इसके आगे हुमायूं की समाधि के प्रवेश मार्ग में प्रवेश करने पर हमें एक बड़ा वर्गाकार हाता मिलता है। इस बड़ा चौकोर हाता के मध्य में हुमायूं की समाधि है। समाधि पत्थर के एक बड़े चबूतरे पर बनी है। समाधि से प्रत्येक बग़ल के मध्य में हुमायूं की नालियां बनी हैं। यह नालियां पानी से भरी रहा करती थीं जिसके कारण बाटिका हरी-भरी बनी रहती थी। जल-मार्गों के मध्य वृक्ष तथा घास है। बड़ी पथरीली नहर के दोनों ओर भांति भांति के पुष्प लगाये जाते थे जिनमें गुलाब जैसे पुष्प दिन में और मोगरा, बेला, चमेली आदि रात्रि में खिला करते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि पुष्प इस नियत से लगाये जाते थे कि कभी भी जो घूमने के लिए आवे उसे खिले हुये पुष्प दिखाई पड़ें। बड़ी बड़ी नहरों के मध्य छोटे छोटे बृक्ष लगाये गये थे। उनमें से कुछ वृक्ष अनार आदि के फल वाले और कुछ अमिलतास ऐसे पुष्प वाले वृक्ष लगाये गये थे। इस प्रकार चाहे ग्रीष्म अथवा शीतकाल हो रात अथवा दिन हो हर समय सुन्दर वृक्ष तथा पुष्प देखने को मिलते थे। मुग़ल सम्राट बाटिकाओं से बड़ा प्रेम करते थे इस लिये जहां कहीं वह जाते थे बाटिकाएं लगाते थे। इसी कारण उन लोगों ने जहां कहीं भी समाधियां बनवाईं वहां बाटिकाएं अवश्य लगाई हैं।

हुमायूं की समाधि एक बड़े पत्थर के चबूतरे पर है। सभी मुग़ल समाधियां इसी प्रकार बनाई गई हैं। समाधि में लाल बलुहा पत्थर तथा संगमरमर लगाया गया है यह पत्थर बड़े बहुमूल्य थे पर चूंकि मुग़ल सम्राट आगे के राजाओं की अपेक्षा अधिक धनी थे इस लिये वह इन पत्थरों का प्रयोग किया करते थे। समाधि का गुम्बद स्वेत संगमरमर का बना है। समाधि की छत के ऊपर गुम्बद के चारों ओर छोटे छोटे घर अथवा गुम्बदाकार स्थान बने हुये हैं। इन स्थानों को पाठशाला में अरबी शिक्षा पाने वाले विद्यार्थी प्रयोग किया करते थे। छत पर से यमुना, जामा मसजिद, कुतुबमीनार और दिल्ली के दूसरे प्रधान भवनों का दर्शन हो सकता है।

अकबर, शाहजहां और साम्राज्य के दूसरे बड़े व्यक्ति यहां नगर का दृश्य देखने तथा सुन्दर शीतल वायु सेवन के हेतु यहां आया करते थे। समाधि के चबूतरे के नीचे गुम्बदों में बहुत सी क़ब्रें बनी हैं। यह सभी समाधियां मुग़ल वंश के लोगों की हैं। पर इन समाधियों पर प्रत्येक के नाम अंकित नहीं हैं इस कारण यह बतलाया नहीं जा सकता है कि यह किसकी क़ब्रें हैं। इनमें से एक समाधि दाराशिकोह की है। यहां पर इतनी अधिक समाधियां बनी हुई हैं कि हुमायूं की समाधि तैमूर घराने का "विश्राम घर" कहलाता है।

समाधि की छत से यदि नीचे दृष्टि डाली जाय तो रेलवे और हाते के मध्य नीले गुम्बद की एक समाधि है। यह बाबर

की समाधि कहलाती है। यह समाधि बाबर ने अपने एक नाई की स्मृति में बनवाई थी जिसे वह बहुत प्यार किया करता था।

जब १८५७ ई० में बहादुरशाह को दिल्ली से भागना पड़ा तो उसने हुमायूं की समाधि में शरण ली थी यहीं पर उसने अंग्रेजों को आत्मसमर्पण किया था और फिर उनके साथ दिल्ली वापस गया था।

निज़ाम उद्दीन की समाधि

तुग़लक़ काल में निज़ाम उद्दीन एक बड़े साधु या महात्मा थे। यह समाधि उन्हीं के स्मृति में बनाई गई है। साधु का पूरा नाम शेख निज़ाम उद्दीन चिश्ती है। निज़ाम उद्दीन की समाधि के समीप एक सरोवर बना हुआ है। निज़ाम उद्दीन ने स्वयं इस सरोवर को बनवाया था। इस सरोवर के बनवाने में निज़ाम उद्दीन का सम्राट ग़यास उद्दीन से झगड़ा हो गया था। कहते हैं कि जब ग़यास उद्दीन बादशाह ने तुग़लक़ाबाद बनवाना आरम्भ किया तो उसे नगर की बड़ी दीवार बनाने के लिये मजदूरों की बड़ी आवश्यकता थी इसलिये बादशाह ने आज्ञा निकाली कि मज़दूर दीवार निर्माण कार्य में लगा दिये जायं। उसी समय साधु निज़ाम उद्दीन अपना सरोवर बनवा रहे थे। सरोवर के बनाने में जो लोग काम कर रहे थे वह अपना काम छोड़ कर दीवार बनाने के काम में नहीं जाना चाहते थे इसलिये उन्होंने राजाज्ञा का उलंघन किया। उस समय ग़यासउद्दीन बादशाह बंगाल में था जब उसने अपनी आज्ञा के उलंघन का

समाचार सुना तो उसने शपथ ली कि दिल्ली लौट कर वह निज़ाम उद्दीन को सज़ा देगा। निज़ाम उद्दीन के मित्रों ने उन्हें सलाह दी कि बादशाह के लौटने के पहले वह दिल्ली छोड़ कर भाग जावें पर साधु ने भागने से इन्कार कर दिया और कहा "देहली दनोज़ दूर अस्त" अर्थात् दिल्ली अब भी बहुत दूर है। आख़िरकार बादशाह अफ़ग़ानापुर बंगाल से लौटकर आगया। यह स्थान दिल्ली के समीप है। यहीं पर ग़यास उद्दीन जिस घर में टिका था उसकी छत गिर गई और बादशाह उसी में दबकर मर गया। इस प्रकार निज़ाम उद्दीन बादशाह द्वारा सज़ा पाने से बच गया।

निज़ाम उद्दीन की समाधि के समीप सरोवर भी बना है। सरोवर से आगे बढ़ कर एक मैदान है जहां पर यह समाधि बनी है। साधु की मृत्यु होने पर यह समाधि बनाई गई थी पर शेष बिल्डिग बाद में बनाई गई थी। क़ब्र के चारों ओर संगमरमर के जो मेहराब बने हैं उन्हें शाहजहां ने बनवाया था। यह मेहराब बड़े सुन्दर हैं। अकबर द्वितीय ने गुम्बद बनवाया था समाधि के ओर एक बड़ी ही सुन्दर मसजिद बनी है। इसको जमात-ख़ाना कहते हैं। यह मसजिद अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाई थी शायद इसी मसजिद के कारण निज़ाम उद्दीन ने अपनी समाधि और सरोवर के लिये यह स्थान चुना था। समाधि के मैदान के चारों ओर जाली का परदा बना है इसे शाहजहां ने बनवाया था। यह जाली संगमरमर की बनी हुई है। जाली का काम बहुत अच्छा तथा सुन्दर है। उसकी

कारीगरी दिल्ली के महल तथा आगरा के शाहजहां के महल की भांति ही है।

निज़ाम उद्दीन की समाधि के चारों ओर इतनी अधिक समाधियां बनी हुई हैं कि उन सबको देखने में प्रायः दिन भर लग जाता है। उनमें से कुछ प्रसिद्ध तथा अच्छी समाधियों का वर्णन यहां पर किया जाता है।

जहांनारा की क़ब्र—निज़ाम उद्दीन की समाधि के मैदान में एक ओर एक छोटे घेरे में शाहज़ादी जहांनारा की समाधि है। समाधि के सिर पर एक संगमरमर का पत्थर गड़ा हुआ है शेष उसकी कब्र पर हरी हरी घास है। वह मुग़ल शाह-ज़ादियों में सर्वोत्तम शाहज़ादी थी, उसकी क़ब्र सबसे अधिक सादी तथा सुन्दर बनी है। कई वर्षों तक वह शाहजहां के दरबार में बादशाह बेगम के स्थान पर आसीन थी जब औरंजेब ने अपने पिता के साथ आठ वर्ष तक क़ैद में रह कर उसकी सेवा करना स्वीकार किया। उसने अपनी मृत्यु के पूर्व अपनी समाधि के स्मृति चिन्ह पर अंकित करा दिया था कि 'जहांनारा की कब्र को हरी घासों के अतिरिक्त और किसी से मत ढको क्योंकि सबसे छोटे के लिये यही सर्वोत्तम ढकन है। जैसे कि शहज़ादी ने लिखा था वैसा ही हुआ और अब भी उसकी क़ब्र पर हरी घास उगती है।

अमीर खुसरो की समाधि :—अमीर खुसरो दिल्ली के समस्त कवियों में सब से बड़ा कवि माना जाता है। वह अला-उद्दीन के समय में था। 'वह अलाउद्दीन के पुत्र खिज्रखां का बड़ा मित्र था और खिज्रखां की वीरता के सम्बन्ध में उसने

लिखा था। अलाउद्दीन को अपने पुत्र से द्वेष-भाव उत्पन्न होगया था आखिरकार उसने अपने पुत्र को क़ैद कर दिया था। कुछ समय के पश्चात् वह मर गया और उसका नालायक़ लड़का मुबारक मार डाला गया। उसके पश्चात् खिल्जी वंश का नाश हो गया। जहांनारा की समाधि के आगे खुसरो की समाधि है। यह एक घेरे में है। इसके चारों ओर राजकुमारों तथा अमीरों की समाधियां हैं।

ग़ालिब की समाधि :—निज़ामउद्दीन की कब्र के बाहर एक छोटा क़ब्रस्तान जिसमें कुछ सादी कब्रें बनी हैं। उनमें से एक क़ब्र ग़ालिब की है। ग़ालिब उन्नीसवीं शताब्दी के उर्दू कवियों में सबसे बड़े कवि थे। वह बहादुरशाह के मित्र और दरबार की कवि ज़ौक़ के विरोधी थे। ग़ालिब की कब्र पर फारसी में स्मृति शब्द अंकित हैं। कब्र के सामने लोग कवि के आदर में सिर झुकाकर खड़े होते हैं।

अतगाह खां की क़ब्र :—ग़ालिब की समाधि के समीप अतगाह खां की समाधि है। यह लाल पत्थर की बनी है और इसका गुम्बद संगमरमर का बना है। अतगाह खां ने अकबर का पालन-पोषण किया था। वह अकबर का बड़ा मित्र था पर आदम खां उसका विरोधी हो गया था। आदम खां अकबर का पालन-पोषण करने वाली मां महम अंका का पुत्र था। उसने अकबर के लड़कपन में साम्राज्य का शासन भार संभाला था। एक दिन अतगाह और आदमखां में लड़ाई हो गई और अतगाह मारा गया। अपने हाथों को खून से रंगे हुये अकबर

के निजी कमरे में आदम खां घुस गया। अकबर क्रोध से उछल पड़ा और आदम खां को पकड़ लिया और चबूतरे पर घसीट कर ले गया और ढकेल दिया। उसी दिन से महम-अंका को अकबर ने निकाल दिया और स्वयं शासन करने लगा।

चौंसठ खम्भा :—यह संगमरमर का एक बड़ा कमरा या बरामदा है। इसमें चौंसठ स्तम्भ हैं। यह मथुरा सड़क के समीप स्थित है। यहां अतगाह खां के पुत्र मिर्ज़ा अज़ीज़ कोकलताश की समाधि है। यह बड़ा सुन्दर तथा देखने योग्य है।

पाठको यदि तुम दिल्ली जाओ तो निज़ाम उद्दीन की समाधि को अवश्य देखो। वहां पर मेला लगता है। समाधि के समीप ही खां हसन निज़ामी खां नामक व्यक्ति रहते हैं वह अपने को शेख निजाम उद्दीन के वंशज बतलाते हैं। निज़ाम उद्दीन की समाधि के पास ही बहुत सी दूसरी समाधियां भी हैं। प्रत्येक समाधि पर पत्थरों पर उनके नाम आदि अंकित हैं उन्हें पढ़ो और उस समय की शिल्पकला का अध्ययन करो। झंझरियां (जालियां) तथा मेहराब आदि शाहजहां के समय के और छोटे गुम्बदादि और पीछे काल के बने हुये हैं। देखने से तुम्हें पता लगेगा कि जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया और मुगल साम्राज्य की औनति होती गई वैसे वैसे शिल्प कला में भी कमी होती गई और त्रुटि आती गई।

यदि समय मिले तो निज़ामउद्दीन ग्राम में जाकर खान-जहां की दरगाह को अवलोकन करो। खान-जहां फिरोज़शाह

तुग़लक़ का प्रधान मंत्री था। वहीं पर खान-जहां की बनवाई हुई एक मसजिद भी है।

मोथ की मसजिद

मोथ की मसजिद दिल्ली से बाहर दूर स्थित है इसी कारण बहुत कम लोग इसे देखने जाते हैं। शीत काल में इस मसजिद को देखना अधिक उत्तम है। इस मसजिद को जाने के लिये दो मार्ग हैं। प्रथम मार्ग यह है कि यदि हम तांगा या मोटर पर बैठकर कुतुब रोड (सड़क) से होकर जांय तो हमें सफदरजङ्ग का मक़बरा और हवाई अड्डा मिलेगा। उससे एक मील आगे सड़क के बाईं ओर एक मोथ-की-मसजिद का चिन्ह-स्तम्भ लगा हुआ है इस चिन्ह-स्तम्भ से एक कच्ची सड़क सीधे मसजिद को जाती है। यह मसजिद अपने नाम के ग्राम मसजिद-मोथ में स्थित है। इस मसजिद को सिकन्दर लोदी के वज़ीर मियां बुहवा ने बनवाया था।

कहते हैं कि एक दिन बादशाह अपने मंत्री के साथ नमाज़ पढ़ने के लिये मसजिद में गया। ठीक प्रार्थना के पूर्व एक पक्षी ने मोथ का एक बीज बादशाह के सामने गिरा दिया। बादशाह ने उसी के ऊपर सिजदा किया। जब बादशाह सिजदे से उठा तो वज़ीर ने मोथ का बीज देखा उसने उस बीज को उठा लिया और अपने हृदय में विचारांश किया कि जिस बीज को बादशाह ने सिजदा करके इतना सन्मान दिया उसे

यूंही न फेंक देना चाहिये। वज़ीर ने उसे बो दिया और फिर पौदे के जो बीज मिले उन्हें फिर बोया इस प्रकार धीरे धीरे इतना अधिक मोथ की उत्पत्ति वज़ीर ने की कि बेच कर वज़ीर ने बहुत सा धन एकत्रित कर लिया और फिर उसी धन से उसने मसजिद बनवाई जिसका नाम करण वज़ीर बीज के नाम पर मोथ-की मसजिद रक्खा।

मसजिद को जाने के लिये दूसरा पैदल मार्ग है। यह मार्ग सफदरजङ्ग समाधि से जाता है। यह मार्ग खेतों के बीच होकर जाता है। अलीगञ्ज के हाते के समीप है यह रास्ता कुतुब सड़क से अलग हो जाता है। यहां की भूमि बिलकुल साफ है और खुले हुये मैदान में बड़े बड़े स्मारकों का समूह दिखाई पड़ता है। यह सय्यद-स्मारक कहलाते हैं। मार्ग सीधा इन्हीं की ओर जाता। है इन्हीं स्मारकों से रास्ता मोथ की मसजिद को जाता है।

तैमूर के आक्रमण और मुग़लकाल के मध्यवर्ती समय में जो मसजिदें भारतवर्ष में बनी हैं उनमें से सर्वोत्तम दो मसजिदों में से एक मोथ की मसजिद और दूसरी शेरशार की मसजिद है।

मोथ की मसजिद में हम गांव वाले मार्ग से होकर एक सुन्दर प्रवेश द्वार से घुसते हैं। प्रवेश द्वार में भिन्न भिन्न प्रकार के रंग-विरंगे पत्थर लगे हुये हैं। यह पत्थर लाल, नीले, काले, स्वेत आदि में भाँति भाँति रङ्गों के हैं। यह देखने में बड़े ही सुन्दर प्रतीत होते हैं। द्वार के मेहराब को देखने से पता चलता है कि उसके निर्माण में हिन्दू और मुसलमान दोनों प्रकार के शिल्पकारों ने कार्य किया है।

इस मसजिद की छत से समस्त दिल्लियों (प्राचीन तथा नवीन आठ नगर) का अवलोकन होता है। एक ओर कुतुब मीनार, सिरी, विजयमंडल और चिराग दिल्ली दिखाई देते हैं। नीचे आकाश और पृथ्वी से मिले हुये भाग में तुग़लकाबाद की दीवारें दिखाई पड़ती हैं। गांव की ओर दृष्टि डालने पर हुमायूं का मक़बरा, पुराना क़िला और खान-खानाँ का स्मारक दिखाई पड़ता है। नई दिल्ली की ओर देखने पर सफदरजङ्ग का मक़बरा, लोदियों के मक़बरे और जामा मसजिद आदि दिखाई पड़ते हैं दिल्ली छोड़ कर कदाचित ही और किसी नगर में इतने स्मारक एक ही स्थान से दिखाई पड़ते हों।

सफ़दर जंग का मक़बरा

मुग़ल स्मारकों में सफदर जंग का स्मारक सब से अंतिम काल का बना हुआ है। यह हुमायूं की समाधि की भांति ही बड़ा है पर उतना सुन्दर नहीं है इसके दो कारण हैं एक तो यह कि इसमें हुमायूं के स्मारक की अपेक्षा मध्यम श्रेणी का सामान लगाया गया है। इसके निर्माण में लाल बहुमूल्य पत्थर की अपेक्षा कारीगरों ने हल्के भूरे रंग के पत्थर का प्रयोग किया है। यह भूरे रंग का पत्थर वैसे दिखाई पड़ता है जैसे कि मुर्झाये हुये पुष्प का रंग प्रतीत होता है। यदि गुम्बद की ओर ध्यान दिया जावे तो मालूम होगा कि उसमें गंदे पीले

धब्बे से मालूम होते हैं। इसका कारण यह है कि इसका संगमरमर हुमायूं के स्मारक की अपेक्षा निकृष्ट श्रेणी का है। उस काल के निर्माण करता कम धनी थे। दूसरा कारण यह है कि इसकी आकृति हुमायूं-स्मारक की अपेक्षा कम सुन्दर है। इसके अतिरिक्त उस समय के कारीगर हुमायूं के समय के कारीगरों से कम चतुर शिल्पकार थे। उस समय बहुत कम लोग अच्छे भवन तयार करा सकते थे इस कारण कारीगर भी निर्माण-कार्य में कम कुशल होते थे। सफदर जंग सबसे अंतिम अमीर सरदार था जिसने इस बड़े स्मारक को बनवाया था।

सफदरजंग अवध का दूसरा नवाब था और अपने चचा सआदत खां के पश्चात् १७३९ ई० में गद्दी पर आसीन हुआ था। जब नादिरशाह ने दिल्ली पर अपना अधिकार जमाया तो उसने सआदत अली का बड़ा निरादर किया था इस कारण वह विष खाकर मर गया था। कई वर्षों तक सफदर जंग साम्राज्य का वज़ीर रहा। १७५२ ई० में अहमदशाह ने उसे निकाल दिया और उसके स्थान पर ग़ाज़ी उद्दीन इमादुल मुल्क को वज़ीर बनाया था। छः महीने तक दिल्ली में सफदर जङ्ग और इमादुल मुल्क के बीच गृह युद्ध होता रहा। सम्राट अहमद-शाह के साथ इमादुलमुल्क ने शाहजहांनाबाद पर अधिकार कर रक्खा था और सफदर जंग ने पुराना क़िला और फीरोज़ा-बाद तथा उनके मध्यवर्ती भूमि पर अधिकार प्राप्त कर रक्खा था। उस समय यह स्थान प्राचीन दिल्ली और शाहजहानाबाद नवीन दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध था। सफदर जंग अच्छा

सैनिक नहीं था। अंत में हार खाकर वह अवध के सूबे में भाग गया। उसके पुत्र शुजाउद्दौला ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया था और क्लाइव के साथ संधि की थी। उसने अवध की रियासत की नींव डाली थी जिसे डलहौज़ी ने ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था। विप्लव काल तक इस स्मारक पर अवध के नवाबों का अधिकार रहा। इस स्मारक के तीनों तरफ वाटिका में गुम्बदाकार भवन बने हुये हैं। जब कभी नवाब घराने के लोग दिल्ली आया करते थे तब वह उन्हीं भवनों में रहा करते थे।

अब सफदर जंग का स्मारक पुनः प्रसिद्ध हो गया है क्योंकि यह स्थान दिल्ली आने वाले वायुयानों का चिन्ह स्थान है। प्रत्येक रात्रि को स्मारक गुम्बद में लाल बत्ती जला करती है। जिससे वायुयान निर्भयता पूर्वक सुरक्षित स्थान में उतर सकें।

कुतुब सड़क पर बाईं ओर एक नीचा पत्थर का चबूतरा है। यह मिरज़ा नज़ात खां का स्मारक है। १० वर्ष (१७७–८२) तब नज़ात खां शाह आलम का प्रधान मंत्री था। वह एक बीर सैनिक और कूटनीतिज्ञ व्यक्ति था। उसकी मृत्यु के समय उसके अधिकार में ६० हज़ार सैनिक थे। उसकी मृत्यु के पश्चात् शाह आलम मरहठा माधोराव सींधिया के अधीन हो गया था। नज़ाफखाँ की जागीर की राजधानी नजाफ गढ़ थी इसी से उसका नाम भी उसी के नाम पर प्रसिद्ध है।

इसके आगे विलिंगडन हवाई अड्डा है। यहां पर चारों ओर एक बड़ा समतल मैदान है। इसी मैदान में तैमूर जंग

और दिल्ली सम्राट मोहम्मद तुग़लक़ से युद्ध हुआ था। मोहम्मद तुग़लक़ के सेनापति का नाम मल्लू खां था। नादिर शाह की भांति तैमूर भी निर्विरोध दिल्ली पर चढ़ आया। दिल्ली के सरदार उस समय आपस में लड़-झगड़ रहे थे। तैमूर ने लोनी (शाहदारा) के समीप एक लाख क़ैदियों के साथ अपना डेरा डाला और मेटकाफ़ भवन के समीप यमुना को पार किया और पहाड़ी चट्टान की ओर बढ़ा। वहां मोहम्मद ने उस पर आक्रमण किया पर पीछे हटा दिया गया। जब आक्रमण का समाचार क़ैदियों को मिला तो वे बड़े प्रसन्न हुये। उनकी प्रसन्नता देखकर तैमूर ने उन्हें कत्ल करवा दिया। इसके पश्चात् तैमूर अपनी समस्त सेना के साथ यमुना नदी पार किया और वर्तमान नगर होकर वह इसी हवाई अड्डे का भूमि पर पहुँचा। मोहम्मद तुग़लक़ ने अपनी सेना जहांपनाह (महरौली के समीप) से एकत्रित की और तैमूर का सामना करने के लिये आगे बढ़ा मोहम्मद की सेना में हाथी थे जिनसे मुग़ल भयभीत थे पर तैमूर के पास अच्छे घुड़सवार थे। मुग़लों ने तुग़लक सेना पर आक्रमण करके उसे परास्त कर दिया। सेना के हाथी अपनी सेना पर ही पीछे की ओर भागे और सेना को कुचल डाला। तैमूर १५ दिन तक दिल्ली में रहा उसके पश्चात् यमुना को पार कर मेरठ की ओर बढ़ा। इस मैदान को तैमूर ने इस कारण युद्ध-क्षेत्र चुना था कि यह मैदान समतल था और यहां पहाड़ी अथवा मकान आदि नहीं थे।

यह बात याद रखने योग्य है कि तैमूर के समय के मुग़ल

बाबर के समय वाले मुग़लों की अपेक्षा बहुत क्रूर निर्दयी और असभ्य थे। इसी कारण तैमूर ने एक लाख कैदियों की हत्या एक साथ करा दी थी साथ ही साथ जिस मार्ग होकर उसकी सेना गई हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को समान रूप से कत्ल करती गई। पर बाबर और उसके मुग़ल बड़े सभ्य थे।

लोदी स्मारक

सफदर जङ्ग के स्मारक के समीप लोदी स्मारक स्थित है। यह आज कल नई दिल्ली में विलिंगडन पार्क में पृथ्वीराज सड़क के समीप स्थित है। यहां मोटर मार्ग अजमेर द्वार से सफ़दर गंज होकर जाता है और तांगा मार्ग दिल्ली द्वार से हार्डिंज अवेन्यू और पृथ्वी राज सड़क होता हुआ साउथ एंड सड़क पर जाता है। इसी सड़क से लोदी स्मारक के प्रधान द्वार को मार्ग है। प्रधान द्वार राटेडन सड़क पर है।

यदि हम विलिंगडन पार्क में प्रधान द्वार से प्रवेश करें तो सब से पहले हमें सिकन्दर शाह लोदी का स्मारक मिलेगा। यह स्मारक एक दीवार द्वार घिरे हाते में स्थित है। इसकी मरम्मत सरकार ने अभी हाल ही में कराई है। सिकन्दरशाह लोदी अपने वंश का दूसरा राजा है। वह एक अच्छा और वीर राजा था। वह अधिकांश आगरा में रहा करता था वहां उसने अपने नाम पर सिकंदराबाद नगर बसाया था। सिकन्दरा-

बाद अब केवल एक गांव के रूप में रह गया है। यहां पर अकबर का स्मारक है।

सिकन्दर स्मारक के बाद एक मसजिद है। मसजिद के समीप बड़ा वर्गाकार भवन है जिसके ऊपर एक बड़ा स्मारक की भांति गुम्बद है पर सचमुच यह मसजिद में जाने का मार्ग है। बड़े होने के कारण इसे बड़ा गुम्बद कहते हैं। इसे सिकन्दर लोदी के मुग़ल सरदार अबू अमजद ने १४९४ ई० में बनवाया था। यह गुम्बद पूर्ण-रूपेण गुम्बद है। अर्थात् पूरा अर्ध-वृताकार है। सिकन्दर स्मारक की भांति बड़ा गुम्बद के पास एक और स्मारक है। कुछ लोग इसे बहलोल लोदी का स्मारक कहते हैं पर पत्थर पर कुछ नाम अंकित न होने के कारण निश्चिय रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता कि यह किसका स्मारक है। चिराग़ दिल्ली में एक स्मारक है जिसे विद्वान लोग बहलोल लोदी का स्मारक कहते हैं।

कुछ दूरी पर सड़क के समीप सिकन्दर लोदी के स्मारक की भांति मुबारकशाह सय्यद का स्मारक है। वह प्रथम सय्यद सम्राट था, और लोदी स्मारकों में यह स्मारक सब से अधिक पुराना है।

यह सभी स्मारक एक ही ढंग के हैं। कुछ इनकी बनावट तथा कला निराली है। कुछ लोग इसे पठान कला के नाम से पुकारते हैं। पर इसके लिये उपयुक्त नाम लोदी-कला है क्योंकि लोदी लोग सीमावर्ती पठान नहीं वरन् अफ़ग़ान थे। लोदी शिल्प कला का उत्थान तैमूर के आक्रमण के पश्चात् पन्द्रहवीं सताब्दी में हुआ था और वह कला मुग़ल समय तक चलती रही।

यहां पर हम कुछ चिन्ह बताते हैं जिससे लोदी समय के भवनों की पहचान मुग़ल कालीन भवनों से की जा सकती है।

मक़बरे (स्मारक):—लोदी कला के स्मारक बर्गाकार नहीं होते वह अष्टभुजाकार होते हैं। स्मारकों के चारों ओर बराम्दे होते हैं जिनमें बड़े मज़बूत बर्गाकार स्तम्भ लगे रहते हैं। गुम्बद निचले या आधे होते हैं। गुम्बद के चारों ओर छोटी छोटी छतरियां होती हैं। प्रत्येक छतरी में एक छोटा गुम्बद होता है। इस तरह छोटे-छोटे गुम्बद बड़े के चारों ओर उसी प्रकार फैले होते हैं जैसे कि मुर्गी के चारों ओर उसके बच्चे फैले रहते हैं।

मसजिद:—इस काल की मसजिदों का रूप ही निराला होता है। इस कला वाली मसजिदों के पीछे (पश्चिम) वाली दीवार के कोणों पर गोले मीनार अथवा स्तम्भ होते हैं। यह स्तम्भ नीचे मोटे और ऊपर की ओर पतले होते हैं। यह स्तम्भ या मीनार पांच भागों में या कोठों में बंटे होते हैं यह कला क़ुतुबमीनार की नक़ल है। कारीगरों ने इन मीनारों को बनाते समय कुतुबमीनार को अपना माडल समझ रक्खा था। भारतवर्ष में शिल्पकारों ने और कहीं ऐसा नहीं किया है।

अब इन भवनों के गुम्बद भूरे और गंदे हैं पर जब यह नये थे तो यह सफेदी से पुते थे और इन पर स्वेत प्लास्टर किया हुआ था। यह उसी भांति धूप में चमकते थे जैसे कि आज हुमायूं का स्मारक चमकता है।

सरकारी पौधे वाली बाटिका के आगे कुतुब की ओर इस

काल के कुछ और स्मारक हैं । मोथ की मसजिद जाते समय यह देखे जा सकते हैं । यह विश्वास किया जाता है कि उन्हें दिल्ली के सय्यद राजाओं ने बनवाया होगा पर निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनमें शिला-लेख नहीं हैं ।

सिविल लाइन्स

सिविल लाइन्स में ब्रिटिश कालीन और पूर्व-ब्रिटिश कालीन कुछ प्रसिद्ध भवन तथा स्मारक हैं । मुग़ल काल के पूर्व रिज़ु (पहाड़ी) एक शिकार गाह (शिकार करने का स्थान) था । मुग़ल काल में यह समस्त भूमि बाटिकाओं से परिपूर्ण था । वज़ीराबाद तक नदी के किनारे किनारे बाटिकाएं और ठहरने तथा वायु सेवन के स्थान बने हुये थे । पहाड़ी के पीछे से नहर के समीप आज़ादपुर तक फैले हुये थे । यह सभी प्रान्त मुग़ल और ब्रिटिश कालीन दिल्ली का पश्चिमी सिरा कहलाता है ।

काश्मीर द्वार से नगर छोड़ने के पश्चात् हमें पहले कदसिया बाटिका मिलती है । इसका एक भाग पुराने कुदसयिा बाग़ का है जिसे क़ुदसिया बेगम ने बनवाया था । क़ुदसिया बेग़म अहमद शाह की मां और मोहम्मद शाह की पत्नी थी । अब भी इसका प्रवेश द्वार, मसजिद और दो गुम्बदाकार भवन देखे जा सकते हैं । अब यह बाटिका के निरीक्षक का निवास स्थान तथा मसोनिक हाल का काम देते हैं । किसी समय में यहां एक सुन्दर पत्थर का चबूतरा था जो अब हराघाट कहलाता है । बेला सड़क

के ठीक नीचे होकर यमुना जी प्रवाह कर रही हैं। नदी के किनारे इसी प्रकार और भी दूसरी बाटिकाएं थीं जिनका अनुमान किनारे के प्राचीन पत्थरों तथा ईंटों से लगाया जा सकता है और आगे चलने पर हिन्दू राव हास्पिटल के समीप एक छोटा स्तम्भ है। यह अशोक की लाट का एक भाग है। जिसे फिरोज शाह ने लाकर यहां स्थापित कर दिया है इसे उसने मेरठ के समीप पाया था। फीरोज शाह कोटला में एक दूसरी अशोक की लाट है अशोक की लाटों में अशोक की घोषणाएं अंकित हैं। यह लाटें २५० वर्ष ईसा के पूर्व पूरी पत्थर की एक शिला काट कर बनाईं गई थीं। यह लाटें दिल्ली के अति प्राचीन कालीन स्मारकों में से हैं।

और आगे सड़क पर एक ऊँचा पथरीला विशाल भवन है और उसके आगे एक पुरानी मसजिद है। यह भवन फीरोज़ शाह तुग़लक़ द्वारा १३६० ई० में बनाये गये महल के भाग हैं। वह यहां शिकार खेलने के हेतु आया था अतः उसने यहां अपनो शिकार गाह बनाई थी। यह उस समय .खुश्की-शिकार के नाम से प्रसिद्ध था अब इसे पीर-गैब कहते हैं। इसी प्रकार का एक दूसरा स्थान पहाड़ी पर सरोवर के समीप है। महल से एक तहख़ाने का मार्ग (सुरंग मार्ग) नीचे मैदान को जाता है अब यह मार्ग ख़तरनाक हो जाने से बन्द कर दिया गया है ठीक इसी स्थान पर १३९८ ई० में तैमूर पर मल्लूखां ने आक्रमण किया था। यह यमुना के ऊपर की ओर दृष्टि डालने पर एक छोटी पहाड़ी पर एक गाँव दिखाई पड़ता है। वह लोनी गांव है

जहां तैमूर की सेना यमुना पार करने के पूर्व रुकी थी। उस समय यह एक उन्नत शील नगर था पर अब एक छोटा गाँव रह गया है। यहाँ हम शहदारा से रेल द्वारा जा सकते हैं। यहां नदी के ऊपर देखने से वज़ीराबाद के पम्पिंगस्टेशन की चिमनी दखिाईपड़ती है। इसी स्थान से दिल्ली पर आक्रमण करते समय तैमूर ने नदी पार किया था।

हिन्दू राव का घर:—इस घर को दिल्ली के रेज़ीडेंट सर एडवर्ड कोल ब्रुक ने बनवाया था। उसमें उस समय विलियम फ्रेज़र रहा करता था। फ्रेज़र के बाद उस घर में हिन्दूराव रहने लगे। हिन्दू राव वैजा बाई (ग्वालियर की रानी) का भाई था। इसी के समीप एक दूसरा बड़ा भवन है जिस सर टामस मेटकाफ़ ने बनवाया था। वह १८ वर्ष तक दिल्ली का कमिश्नर रहा था। वह लार्ड मेटकाफ का भाई था। वह नैपोलियन बोनापार्ट का बड़ा आदर करता था और उस पर अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। यह भवन तथा इसके सामान गूजरों द्वारा विप्लव काल में नष्ट कर डाले गये। नई दिल्ली के बनने के पहले मेटकाफ का घर काउंसिल आफ़ स्टेट के लिये प्रयोग किया जाता था। अब यह पब्लिक सरविस कमीशन का हेडक्वाटर (प्रधान स्थान) है और यहीं पर आई-सी-एस-(इंडियन-सिविल-सर्विस) की परीक्षा होती है।

यहीं लम्बा श्वेत भवन जिसमें दो बड़े टावर (मीनार) हैं वह अल्प कालीन सेक्रेटैरियट भवन है। यहीं पर पहले लैजिस्लेटिव असेम्बली की बैठक हुआ करती थी। यहां पर भारतवर्ष के प्रमुख व्यक्तियां पं० मोतीलाल नेहरू पं० मदन मोहन मालवीय,

मिस्टर जिन्ना आदि बैठा करते थे और अपने भाषण दिया करते थे। पहाड़ी के दूसरी ओर दिल्ली विश्वविद्यालय का भवन है। नई दिल्ली में वाइसराय-भवन बनने के पूर्व यही वाइसराय का निवासस्थान था। लार्डहार्डिंज, लार्डचेम्स्फोर्ड, लार्ड रीडिंग और लार्ड इर्विन सभी इसी भवन में रह चुके हैं। समीप ही वह भवन है जहां महात्मा गांधी ने १९२४ ई० में तीन सप्ताह का उपवास व्रत किया था। उनके उपवास का मुख्य कारण दिल्ली का सम्प्रदायिक दंगा था।

विप्लव काल में पहाड़ी पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमाया था। उस समय विश्वविद्यालय के मैदान में ब्रिटिश सेना ने डेरा डाला था। सब्जीमंडी में घोर युद्ध हुआ था।

अलीपुर सड़क से आगे चलने पर तिमारपुर पहुँचकर नदी की ओर घूमने पर एक सुन्दर पुल मिलता है। यहीं एक मसजिद है जिसमें शाह आलम नामक साधु की क़ब्र है। इस पुल तथा मसजिद को फीरोज़शाह ने बनवाया था।

आज़ादपुर सड़क पर बदली की सराय स्थित है। दिल्ली बदली (उत्तर की ओर) जाते समय लोग यहां ठहरते थे। सड़क पर वहां वृक्षों की पंक्ति लगी हुई है यह पंक्ति लगभग आध मील लम्बी है। यही दिल्ली की शालीमार वाटिका है। इसे शाहजहां ने बनवाया था। यहां पर एक कमल सरोवर तथा प्राचीन प्रपात है। १६५८ ई० में जब औरंगज़ेब दाराशिकोह का पीछा कर रहा था और यहीं उसने अपना ताज-पोशी (राज-गद्दी) की थी। जब अंग्रेज़ दिल्ली आये तो दिल्ली के रेज़ीडेंट सर डेविड आक्टरलोनी और लार्ड मेडकाफ़ ने भी इसे अपना

निवास स्थान बनाया। किसी समय में यह बाग़ लाहौर के शालमिनार बाग़ के भांति ही सुन्दर था।

लाल क़िले की कहानी

यह क़िला दिल्ली नगर का सबसे अधिक प्रसिद्ध भवन है। लाल क़िला को सम्राट शाहजहां ने बनवाया था। यह शाहजहां सम्राट का राजमहल है। यह राजमहल लाल क़िला के नाम से प्रसिद्ध है। इसका मुख्य कारण यह है कि क़िला बहुमूल्य लाल पत्थर से बना है। शाहजहां बादशाह ने इसका उर्दू-य-मुअल्ला नाम रक्खा था। अकबर शाह द्वितीय और बहादुर शाह के समय में लोग इसको क़िले-मुअल्ला के नाम से प्रसिद्ध कर रक्खा था मुअल्ला शब्द अरबी का है और आला से बना है। इस शब्द का अर्थ सर्वोत्तम है। सचमुच ही यह क़िला सर्वोत्तम है।

सभी भारतीय राजमहलों में शाहजहां का यह महल (क़िला) सर्वोत्तम है। आइये हम लोग इस राज महल के विभिन्न भागों का अवलोकन करें। अन्य महलों की भांति इसमें भी नौबत ख़ाना और नक़्क़ार खाना है। यहां राजकीय नौबत बजा करती थी। यह राजकीय नौबत दिन में कई बार बजती थी और यहां बड़े बड़े राजकीय नगाड़े रहते थे।

दीवाने आम:—यह वह बड़ा शाही कमरा है जहां पर राजा की प्रजा जा सकती थी और राजकाज की बातों का नीरीक्षण

कर सकती थी। यहीं पर सम्राट राज-दरबार करता था और प्रजा की शिकायतें आदि सुनता था। वहीं दूसरे राज्यों के दूत राजा से मिलते थे। यहीं सेना का नीरीक्षण कार्य राजा द्वारा किया जाता था। समस्त प्रजा-कार्य इसी कमरे में होता था।

दीवाने खास:—आम शब्द का अर्थ साधारण और खास का अर्थ मुख्य तथा निजी है। इस प्रकार दीवाने आम का अर्थ साधारण दरबार का स्थान और दीवाने-खास का अर्थ राजा का निजी दरबार का है इस कमरे में सम्राट व्यक्तिगत रूप से लोगों से भेंट किया करता था और अपने मंत्रियों से मंत्रण किया करता था। दीवाने खास में आने-जाने तथा बैठने की राज-आज्ञा पाजाना एक बड़ी भारी बात समझी जाती थी यह एक बड़े आदर की बात होती थी। यहीं पर सम्राट अपने मित्रों का स्वागत करता था। जैसे आज कल राजा अथवा राज्य के मंत्रीगण ही राजा के व्यक्तिगत कमरे में प्रवेश कर सकते हैं और स्थान ग्रहण कर सकते हैं इसी प्रकार के लोग उस समय भी दीवाने खास में ऐसे ही लोग स्थान ग्रहण करते थे।

हम्माम—मुग़ल सम्राटों के राजमहलों में एक कमरा खास तौर पर स्नान के लिये होता था। इसे हम्माम या स्नान गृह कहते थे इसी के समीप एक मसजिद भी होती थी जहां राजा प्रार्थना किया करता था। यहां भी हम्माम के समीप एक मसजिद है। महल के भीतर एक मुख्य स्थान सम्राट की प्रमुख राजरानी का होता था जिसे जनान-खाना कहते थे। वहां राज-रानी रहा करती थीं।

दिल्ली-दर्शन

इस क़िले के सामने सब से प्रथम वस्तु जो देखने में आती है वह लाहौर-द्वार के सामने पर्दा वाली दीवार है। इस दीवार को औरंगज़ेब सम्राट ने बनवाया था। इसके बनवाने का मुख्य कारण यह था कि जब सम्राट दरबार-आम में बैठता था तो चांदनी चौक तक साफ साफ दिखाई पड़ता था अतः अमीरों और सरदारों को पैदल चलकर आना पड़ता था क्योंकि सम्राट के सामने वह सवारी पर नहीं चल सकते थे अतः सरदारों को चलने के कष्ट से बचाने के लिये यह पर्दा या दीवार बनाई गई थी।

छत्र चौक या घिरी बाज़ार:—यह लाहौर द्वार के भीतर है। यह मुग़ल शिल्प कला की एक आनोखी शैली हैं। यहां पर दिल्ली के व्यवसायी अपनी सामग्री दरबार के सरदारों और अमीरों के हाथ सौदा वेचा करते थे।

नक़्क़ार ख़ाना या नौबत खाना में हो कर ही महल के भीतर प्रवेश करने का मार्ग है। आज कल नौबत खाना में वार-म्यूज़ि-यम है। यहीं पर १७५४ ई० में सम्राट अहमद शाह की हत्या हुई थी। क़िले की दीवार और नौबत खाना के मध्य जो स्थान है वहां पर महल की चौकीदारी के लिये सैनिक रहा करते थे। मुग़लकाल में राजदरबार का सैनिक होना एक बड़े आदर की बात थी। इस स्थान के सैनिक मुख्यतः राजपूत हुआ करते थे।

दीवान आम में अपने अपने ओहदे के अनुसार सरदार लोग पंतियों में खड़े हुआ करते थे। राजकुमार लोग सम्राट की गद्दी के इधर उधर खड़े होते थे और वज़ीर (प्रधान मंत्री) राजसिंहासन के नीचे संगमरमर की तख़्त पर बैठते थे।

सिंहासन का स्थान ऊँचे पर बना है। सम्राट के जाने के लिये द्वार तथा मार्ग बना है। शाहजहां और सम्राट औरंगज़ेब यहां दिन में दो बार बैठा करते थे। छोटे सरदार कमरे के बाहर खड़े होते थे। साधारण जनता से अलग रखने के लिये इन छोटे सरदारों के लिये खासतौर पर रेलिंग बना दी गई थीं। राजसिंहासन के पीछे फ्रांसीसी कलाकारों की बनाई हुई चित्रकारियां तथा पच्ची कारियां हैं। ग्रीष्म ऋतु में इस कमरे के चारों ओर बड़े बड़े लाल पर्दे धूप और लू से बचने के लिये लगाये जाते थे।

दीवाने आम के बाएं ओर से एक मार्ग कचेहरी को जाता है। यहां पर एक द्वार-मार्ग है जिसे लाल पर्दा कहते हैं क्योंकि इस पर लाल पर्दा पड़ा रहता था। इस मार्ग होकर केवल सम्राट के खास लोग ही प्रवेश कर सकते थे।

दीवाने खास में जो राजसिंहासन है वह सिंहासन शाहजहां का मोर-सिंहासन के स्थान पर है। मोर-सिंहासन को नादिरशाह फारस उठा ले गया था। यहां पर इतिहास की प्रसिद्ध घटनाएं घटी हैं। यहीं गुलाम क़ादिर ने शाह आलम को अंधा किया था। यहीं शाहआलम ने १८०३ ई० में लार्डलेक का स्वागत किया था। १९११ ई० में सम्राट जार्ज पंचम ने यहीं पर दिल्ली दरबार किया था और १९२१ ई० में वेल्स के राजकुमार ने दूसरा दर्बार किया था।

राजमहल में हयात बख़्श और मेहताबबाग़ नामक दो प्रसिद्ध बाग़ हैं। हयात बख़्श का अर्थ ही जीवन प्रदान का है।

यह बड़ा ही सुन्दर है मेहताब बाग़ का अर्थ चन्द्रमा बाटिका है। इस बाटिका के पुष्प चंद्रमा के प्रकाश में फूला करते थे। इस स्थान पर अब भी वह स्थान देखा जा सकता है जहां प्रपात से नीचे पानी गिरा करता था।

बड़े चबूतरे के अंत में शाहबुर्ज़ है। यहां पर सम्राट अपने मंत्रियों के साथ भेद भरी बातों की मंत्रणा करता था। यहां पर सम्राट बैठा करते थे। पुष्प पंतियों के मध्य नहर-बिहिश्त बनी थी। इस नहर में चांदनी चौक की नहर से पानी आता था।

दीवाने खास के दूसरी ओर सम्राट के कमरे हैं इनमें एक कमरा मुग़ल कला तथा शैली अनुसार सजा है जिसे अवश्य ही लोगों को देखना चाहिये। बैठक में सम्राट अपने मित्रों का स्वागत किया करता था। राजमहल में झरोखे पर बैठ कर सम्राट प्रजा को अपना दर्शन दिया करता था। नीचे मैदान में प्रजा खड़ी होती थी और सम्राट झरोखे पर आकर प्रतिदिन एक बार दर्शन देता था।

रंग महल में सम्राट की रानी रहा करती थी किसी समय में यह बहुत सुन्दर महल था पर अठारहवीं और उन्नीसवीं सताब्दी में यह नष्ट हो गया। मुग़ल रीत-रिवाज़ और चित्रों का ज्ञान रंग महल देखने से अच्छा होता है।

लाल क़िला का संक्षिप्त रूप से वर्णन पढ़ कर पाठकों को ज्ञान हो गया होगा कि यह क़िला बड़ा ही महत्व पूर्ण है। एतिहासिक तथा राजनैतिक ध्यान से इस क़िले का महत्व और अधिक है। इसी प्रसिद्ध क़िले में जहां सम्राट शाहजहां और औरंगजेब न्यायाधीश बन कर न्याय करते थे वहां उनके बंशज

बहादुरशाह और उसके पुत्रों पर अंग्रेज सरकार ने इसी क़िले में राजविद्रोह का मुक़दमा १८५७ ई० में चलाया था और उन्हें दोषी ठहराया था। बहादुरशाह के दो कुमारों के शीश काट कर क़िले के द्वार पर लटका दिये गये थे और उन्हीं के रक्त से ब्रिटिश जनरलों ने अपनी प्यास बुझाई थी। बहादुरशाह ने अपने पुत्रों का विनाश अपनी आंखों देखा था। बाद में उसे रंगून ले जाकर कत्ल किया गया था।

प्रसिद्ध लाल क़िले की कहानी आधुनिक समय में प्रायः प्रत्येक भारतीय को कुछ न कुछ अवश्य मालूम है। अभी संसार के महासमर के अंत होने के पश्चात् १९४५ ई० में आज़ाद हिन्द फौज के ऊपर जो अंग्रेज़ सरकार ने मुक़दमा चलाया था। उसकी न्याय अदालत इसी क़िले में एक नये बनाये हुये कमरे में बैठी थी। आज़ाद हिन्द सेना का संगठन जापान अधिकृत पूर्वी प्रदेशों (बरमा-पूर्वीद्वीप समूह) में सुभाष चन्द्र बोस हुये आज़ाद हिन्द सेना के प्रमुख सेनापति मेजर जनरल शाह नेवाज, कैप्टन, ढिल्लन और सहगल अपने प्रमुख अफ़सरों के साथ लाल क़िले में बन्दी बना कर रक्खे गये थे। उन पर सैनिक अनुशासन के अनुसार राज विद्रोह और हत्या का दोष लगाया गया था। भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने वीर पुत्रों के मुक़द्मे की पैरवी का भार अपने ऊपर उठाया और वर्तमान राष्ट्रपति पंडित जवाहर लाल जी नेहरू ने एक कमेटी भारत के प्रधान वकीलों की बनाई जिस पर यह भार रक्खा गया कि वह अपने सपूतों की रक्षा करे। कमेटी के प्रधान वकील स्वर्गीय भूलाभाई देसाई थे। हमारे राष्ट्रपति नेहरू जी ने भी २२ वर्ष

के पश्चात् बैरिस्ट्री का भेष धारण किया था। बड़े जोरों का मुक़द्मा चला। बरमा, पूर्वी द्वीप समूह और जापान आदि से अंग्रेज़ सरकार ने बड़े बड़े गवाह लाकर सपूतों के विरुद्ध गवाही दिलवाई। सफाई की ओर से भी प्रत्येक स्थान से प्रबन्ध किया गया। अंत में हमारे सपूत न्यायालय द्वारा दोषी ठहराये गये परन्तु अदालत ने स्वीकार कर लिया कि सपूतों ने जो कुछ किया वह स्वतंत्र राज्य के प्राणी की हैसियत से नेकनियती से किया। अदालत ने आजन्म कारावास की सज़ा का फैसला सुनाया पर भारत की सेना के प्रधान सेनापति आचेनलेक ने महान दूर-दर्शिता तथा राजनीतिज्ञता का परिचय दिया और तीनों सपूतों की सज़ा माफ करके उन्हें छोड़ने की आज्ञा दे दी।

आज़ाद हिन्द के सपूतों को छुड़ाने के लिये हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस ने इतना प्रबल आंदोलन उठाया था कि भारत वर्ष के प्रत्येक बच्चे, जवान और वृद्ध ने अपने कंधे से कंधा जोड़ दिया आखिर अंग्रेज़ सरकार को भी जन समूह की बात माननी पड़ी और आज़ाद हिन्द सेना के बन्दियों के ऊपर से मुक़द्मा उठा लेना पड़ा। अब सब बन्दी छोड़ दिये गये हैं। शायद अंग्रेज़ सरकार ने सोचा था १८५७ ई० की भांति लाल क़िले में आजाद-हिन्द सैनिकों को फांसी पर लटका कर भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन को कुचलने में वह सफल होगी पर १८५८ ई० के प्रतिकूल १९३५-३६ ई० में भारतीय जनमत के सामने ब्रिटिश साम्राज्य को मुँह की ख़ानी पड़ी।

१८५७ ई० में भारत के सम्राट बहादुर शाह को सपरिवार फांसी पर लटकाकर भारत पर अंग्रेज़ साम्राज्य शासन पुष्ट नीव

लाल किले से पड़ी थी आज प्रतीत होता है कि उसी लाल क़िले से भारतीय जनमत शासन का भी श्री गणेश हुआ है और आशा की जाती है कि कुछ समय पश्चात् दिल्ली के लाल क़िले पर पुनः भारतीय ध्वजा पताका पहरायेगी और "दिल्ली चलो" का नारा सत्य सिद्ध होगा।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार अथवा कुतुबस्तम्भ संसार के प्रसिद्ध मीनारों में से है। इसकी ऊँचाई २३४ फुट है। यह सब से अधिक अकेला ऊँचा स्तम्भ संसार में है। पीसा (इटली) का लीनिंग स्तम्भ और पेकिन (चीन) का दीर्घ पगोडा (बुद्ध मन्दिर) के स्तम्भ भी बहुत ऊँचे हैं पर वे भी इतने ऊँचे नहीं हैं जितना कि कुतुब स्तम्भ है।

कुतुब मीनार के सम्बन्ध में भांति भांति की कहानियां प्रसिद्ध हैं कुछ लोग कहते हैं कि इसे महाराज पृथ्वी राज के चचा विगृह राजा ने बनवाना आरम्भ किया था कुछ का कहना है कि स्वयं पृथ्वी राज ने ही बनवाया था। कुछ भी हो चाहे जिसने इसका आरम्भ किया हो इसकी समाप्ति कुतुब उद्दीन और अल्तमश ने की। यह स्तम्भ १२२० ई० में बन कर समाप्त हुआ और तब से अब तक यह एक संतरी की भांति दिल्ली नगर के पहरे पर खड़ा है। जब अलाउद्दीन दक्षिणी-भारत की विजय करके लौटा तो उसने सोचा कि अपनी विजय स्मृति में

वह एक दूसरा विजय-स्तम्भ कुतुब स्तम्भ का दोगुना ऊँचा बनवाये। उसने अपने विजय स्तम्भ को बनवाना आरम्भ किया और आरम्भ काल में ही उसकी मृत्यु होगई उसके बाद स्तम्भ की समाप्ति किसी ने नहीं की। कुतुब उद्दीन की मसजिद की दूसरी ओर इस बड़ी मीनार के खंडहर अब भी हैं।

फीरोज़ शाह के समय में भूकम्प के कारण कुतुब स्तम्भ के सिरे के दो दर्जे नष्ट हो गये थे इस कारण फीरोज़शाह ने स्तम्भ की मरम्मत कराई और सिरे पर गुम्बद बनवा दिया। १५०५ ई० में सिकन्दर लोदी ने फिर मरम्मत कराया। १७९४ ई० में मेजर स्मिथ ने फिर स्तम्भ की मरम्मत कराया और फीरोज़ शाह के गुम्बद के स्थान पर उसने अपना गुम्बद बनवाया। १८२८ ई० में लार्ड हार्डिंज ने फिर गुम्बद हटवा दिया। फीरोज़ शाह द्वारा बनवाये हुये स्तम्भ के दो ऊपरी दर्जे साफ मालूम होते हैं क्योंकि वे भाग श्वेत संगमरमर के हैं और बिलकुल बराबर हैं। नीचे वाले तीन दर्जे जिन्हें कुतुब उद्दीन और अल्तमश ने बनवाये हैं वह लाल पत्थर के बने हैं।

यदि हम कुतुब स्तम्भ को ध्यान पूर्वक देखें तो प्रतीत होगा कि यह लम्बाकार नहीं हैं वरन् कुछ झुका है भूकम्पों के कारण स्तम्भ में झुकाव आगया है। आज कल आर्कियालाजिकल विभाग के लोग स्तम्भ की देखभाल सतर्कता पूर्वक करते हैं और ज़रा सी दरार होने पर शीघ्र ही उसकी मरम्मत कर देते हैं।

स्तम्भ के नीचे के दर्जे में अल्तमश के मक़बरा की भांति पच्चीकारी की गई है। स्तम्भ के चारों ओर शिला लेख हैं

जिनसे प्रतीत होता है कि स्तम्भ की समाप्ति अल्तमश ने की थी। जैसे जैसे स्तम्भ ऊँचा होता गया है वैसे वैसे उसकी दीवारें भीतर की ओर झुकती गई हैं। स्तम्भ को अधिक दृढ़ बनाने के लिये ही यह क्रिया की गई है।

पाठको यदि तुम्हें कुतुब स्तम्भ देखने का अवसर प्राप्त हो तो उसके ऊपर सीढ़ियों द्वारा चढ़ते हुये सीढ़ियों की गणना अवश्य करना। सीढ़ियों की गणना में बहुधा धोका हो जाता है। सीढ़ियों की कुल संख्या ३७८ है। स्तम्भ की चोटी पर खड़े होकर समस्त दिल्लियों का सुन्दर दृश्य देखने को मिलता है। इसी स्तम्भ पर खिल्जी तथा मुग़लक राजे मुग़ल डाकुओं के समूहों को देखा करते थे जब वह दिल्ली पर आक्रमण किया करते थे। इसी पर खड़े होकर मोहम्मद तुग़लक़ ने विलिंग्डन हवाई अड्डे पर ठहरी हुई तैमूर सेना को देखा था। यहां से हौज़ खास, सिरी, तुग़लक़बाद, हुमायूं का मक़बरा, पुराना क़िला, फीरोज़ शाह कोटला, जाना मसजिद, सफदर जंग के मकबरे, नई दिल्ली, सुल्तान ग़ौरी का मक़बरा सड़कें और उन पर लगे वृक्षों की पंक्ति बड़ी ही सुन्दर दिखाई देती हैं।

क़ूवतुल-स्लाम मसजिद

कुतुबमीनार स्तम्भ के समीप ही यह मसजिद है। इसे क़ूवतुल-स्लाम मसजिद (स्लाम की ताक़त वाली) अथवा बड़ी मसजिद कहते हैं। कुतुब स्तम्भ से मिला हुआ डाक बंगला है। डाक बंगला होकर बड़ी मसजिद में जाने के लिये मार्ग है। मसजिद के तीन भाग हैं।

इस मसजिद को कुतुब उद्दीन ऐबक ने ११९१ ई० में बनवाना आरम्भ किया था। उसके पास अपने कारीगर नहीं थे इसलिये उसने पृथ्वीराज के लाल कोट बनाने वाले राजगीरों (हिन्दुओं) को काम पर लगाया। चौकोर पत्थर के स्तम्भ जो मसजिद में लगे हुये हैं वह हिन्दू मन्दिरों के खम्भे हैं पर मसजिद के पश्चिमी किनारे पर वह नुकीले मेहराब अफ़गानिस्तान की मसजिदों की भांति बनवाना चाहता था। हिन्दू शिल्पकार मेहराब (नुकीला) बनाना नहीं जानते थे। हिन्दू शिल्पकार अपने मेहराबों को पच्चीकारी और चित्रकारी से सजाना चाहते थे। बादशाह मेहराबों पर क़ुरान का आयतें लिखाना चाहता था। अंत में हिन्दू शिल्पकारों ने मेहराब में एक सुन्दर उगते हुये पौधे का चित्र बनाया और उसकी पत्तियों के मध्य में अरबी की आयतें लिख दीं।

मसजिद के आंगन के बीच में एक लोह-स्तम्भ है। यह स्तम्भ चन्द्र नामक हिन्दू राजा द्वारा ५०० वर्ष ईसा के पूर्व स्थापित किया गया था। इस स्तम्भ के लेख चन्द्र राजा के विजय के बारे में अच्छा प्रकाश डालते हैं। यह स्तम्भ सम्पूर्ण लोहे का है शुद्ध लोहे के छड़ बनाना बड़ा ही कठिन काम है।

इसलिये यह स्तम्भ इस बात का साक्षी है कि हिन्दू कारीगर धातु के कार्य में बड़े ही निपुण थे ।

अल्तमश बादशाह ने मसजिद को और अधिक बड़ा करने के लिये ६ मेहराब तीन तीन मसजिद के दोनों ओर और बनवाये । यह मेहराब गौर और फारस के कारीगरों द्वारा बनाए गये थे इस कारण यह हिन्दू कारीगरों द्वारा बनाए हुए मेहराबों की अपेक्षा बिलकुल भिन्न हैं । इन पर फूल, पत्तियों के स्थान पर छोटे छोटे वृत तथा त्रिभुज बनाये गये हैं ।

अपनी नई मसजिद के एक कोण पर अल्तमश ने अपना मक़बरा बनवाया और उस पर वैसी ही पच्चीकारी की हुई है जैसी की मसजिद के मेहराबों पर है ।

अल्तमश की मसजिद दिल्ली की १०० वर्ष तक जामा मसजिद बनी रही । जब अलाउद्दीन खिलजी दकन विजय करके अपार धन लेकर दिल्ली आया तो उसने मसजिद को और अधिक बड़ा करने का विचार किया इसलिये उसने अल्तमश के मक़बरे से आरम्भ करके ६ और मेहराब बनवाये । उसने कुतुब स्तम्भ के समीप एक द्वार मार्ग बनवाया और उसका नाम करण अपने नाम पर अला-दरवाज़ा रक्खा । महरौली में यह सर्वोत्तम द्वार-मार्ग है । पर अलाउद्दीन की मृत्यु मसजिद समाप्त करने के पूर्व ही हो गई ।

१३६० ई० में फीरोज़ाबाद में फीरोज़शाह ने एक दूसरी जामा मसजिद बनवाई उसके पश्चात् यह मसजिद बेमरम्मत हो गई । १३९८ ई० में तैमूर ने इसका निरीक्षण किया था ।

१६०४ ई० लार्ड कर्जन ने कुतुब का निरीक्षण किया और प्राचीन भवनों की देख-रेख तथा मरम्मत के लिये आर्कियालाजिकल विभाग की नीव डाली। यह विभाग बड़ी मसजिद के जो भाग शेष रह गये हैं उनकी ठीक तौर पर अब देख भाल रखता है।

लालकोट (महरौली)

महरौली पहाड़ी पर स्थित है। इस पहाड़ी के सिरे पर पहुँच कर यदि हम ध्यान पूर्वक सड़क के दोनों ओर देखें तो प्रतीत होगा कि कुछ पत्थर और मिट्टी खुदी हुई है। अधिक ध्यान देने पर प्रतीत होगा कि यह पत्थर किसी दीवार के भाग हैं और वह दीवार नगर की बड़ी दीवार की एक भाग मात्र है। यह नगर की दीवार बड़ी मोटी और मजबूत है। यह दीवार प्राचीन हिन्दू दिल्ली नगर की दीवार का एक भाग है। आर्कियालाजिकल विभाग ने नगर की खुदाई की है अभी समस्त नगर की खुदाई नहीं हो पाई है।

कुतुब मसजिद से दाहिने ओर जो सड़क जाती है वही सड़क महरौली को जाती है। बाईं ओर की सड़क तुग़लक़ाबाद को जाती है। महरौली नगर जाने वाली सड़क पर आदम खां और अनगा खां के मक़बरे हैं। आगे बाईं ओर एक मार्ग पर गंडकी बावली है।

महरौली बाज़ार पहुँच जाने पर बाज़ार के मध्य से एक सड़क बाईं ओर घूम जाती है। यही सड़क कुतुब साहब के दरगाह को जाती है। फीरोज़शाह के समय में कुतुब शाह एक

प्रसिद्ध साधु थे। १२३६ ई० में उनकी मृत्यु हुई। वह इतने बड़े साधु थे कि बड़े बड़े लोगों ने अपनी समाधि बनाने की इच्छा उन्हीं के समाधि के समीप ही प्रकट की थी। कुतुब साहब की क़ब्र समतल साधारण भूमि की है पर इसके चारों ओर संगमरमर का घेरा है। इसी के समीप कुछ मुग़ल बादशाहों की समाधियां हैं। वहीं बहादुर शाह प्रथम (औरंगजेब का पुत्र) का मक़बरा है। बहादुर शाह ने मरहठों और राजपूतों से संधि करके पञ्जाब में शान्ति स्थापना की थी। वह बड़ा ही उदार व्यक्ति था अतः उसे लोग बेखबर कहा करते थे। उसी के समीप शाह आलम की समाधि है। शाह आलम ने १८०६ ई० से १८३७ ई० तक राज्य किया था।

कुतुब दरगाह से मिला हुआ दिल्ली के अंतिम सम्राट बहादुर शाह द्वितीय का महल है। महल का द्वार अब भी बना हुआ है पर महल गिर कर खँडहर हो गया है। वर्षा ऋतु में बहादुर शाह यहीं आकर रहता था। बहादुर शाह की समाधि रंगून में है।

महरौली बाजार में एक सुन्दर सरोवर है जिसके चारों ओर गुम्बद बने हैं। इसे तेरहवीं सदी में अल्तमश ने बनवाया था। इसके अतिरिक्त महरौली में और भी देखने योग्य स्थान है। मुग़ल काल में बड़े बड़े सरदार वर्षा काल में महरौली में आकर रहा करते थे अब भी दिल्ली के लोग वर्षा में महरौली में आकर रहते हैं।

दिल्ली-दर्शन

हौज़ खास

कुतुब सड़क पर सफदर जंग मक़बरे से दो तीन मील की दूरी पर मक़बरों का एक समूह है यहीं से हौज़ खास को दाईं ओर सड़क घूमती है। प्रधान सड़क से आध मील की दूरी पर सड़क के अन्त में हौज़ खास है। एक द्वार मार्ग से घेरे के भीतर प्रवेश करके हम एक सुन्दर बाग़ में पहुँच जाते हैं।

हौज़ खास एक सरोवर है। इसकी दो भुजाएँ लगभग आध आध मील लम्बी और दो भुजाएँ तीन तीन फर्लांग लम्बी हैं। सरोवर के केन्द्र में एक द्वीप है जिस पर खंडहर दिखाई पड़ते हैं। वर्षा के पश्चात् जाने पर हौज़ भरा रहता है नहीं तो सूखा रहता है। यह सरोवर रिज के बहाव वाले पानी से भर जाता था। प्राचीन समय में वर्षा के पानी से हौज़ भर दिया जाता था। ग्रीष्म काल में पानी सूख जाने पर ईख, गन्ना, तरबूज, खरबूज़ा आदि बोये जाते थे। जब तैमूर ने आक्रमण किया था तो अपना डेरा हौज़ खास पर डाला था। हौज़खास की भूमि बड़ी उपजाऊ है और शीत काल में नाज के खेत लह-लहाते हुये दिखाई पड़ते हैं।

अलाउद्दीन बादशाह ने हौज़खास को अपने प्रयोग के लिये बनवाया था। इसी कारण इसका नाम भी हौज़खास है। इसकी मरम्मत फीरोज़ शाह ने कराई थी और इसके तट पर एक मदरसा तथा अपना मक़बरा बनवाया था। मदरसा के प्रधान भवन के ऊपर स्तम्भों वाले बड़े कमरे हैं नीचे कमरों की पंक्तियाँ हैं जिनके सामने बराम्दे बने हुये हैं। ऊपर बड़े कमरों

में लड़के पढ़ा करते थे और नीचे के कमरों में वे रहा करते थे। फीरोज़ शाह के समय में यह सबसे बड़ा अरबी का मदरसा था। मदरसे के अन्त में विद्यार्थियों के प्रयोग के लिये एक मसजिद थी।

अरबी मदरसा के अंत में फीरोज शाह का मक़बरा है यह एक चौकोर मज़बूत इमारत है। इसके भीतर बादशाह और उसके बंश के दो दूसरे व्यक्तियों की समाधियां हैं। जब बादशाह १३८८ ई० में मरा तो उसकी अवस्था लगभग नब्बे बर्ष की थी। मदरसा के बाहर बाग़ में छोटी-छोटी छतरियां बनी हुई हैं। यह छतरियां स्तम्भों पर बनी हैं इनमें अधिकांश समाधियां हैं। मदरसे में मजलिसखाना बना है जिसमें समस्त विद्यार्थी तथा मोलवी एकत्रित हुआ करते थे।

सरोवर के चारों ओर बहुत से बड़े-बड़े मक़बरे हैं। यह मक़बरे तुग़लक़ बंश के सरदारों के हैं। इन पर शिला लेख नहीं हैं जिससे ठीक तौर पर नहीं कहा जा सकता कि यह किसके मक़बरे हैं।

तुग़लक़ काल के काज़ी तथा मोलवी लोग इसी बड़ी पाठशाला के पढ़े हुये लोग होते थे और वह समस्त राज्य में न्यायाधीशों के स्थान पर नियुक्त किये जाते थे।

दिल्ली-दर्शन

सिरी

हौज़ खास के मोड़ से कुछ आगे बढ़ने पर एक नई सड़क बाईं ओर घूमती है। वहीं पर एक साइनबोर्ड सिरी जाने वाले मार्ग पर लगा है। लगभग आध मील चलने के पश्चात् सिरी नगर की दीवारें मिलनी आरम्भ हो जाती हैं। कुतुब सड़क से ही सिरी की दीवारें दृष्टिगोचर होने लगती हैं।

नगर की दीवारों की गोलाई लगभग डेढ़ मील है। दीवार टूटी-फूटी है पर कहीं कहीं पर पूर्ण रूप से बनी है। दीवारों के अन्दर आजकल खेतों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। सिरी नगर को अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाया था अलाउद्दीन १२९६ ई० में गद्दी पर आया उसके उद्दी आसीन होने के थोड़े समय पश्चात् ही मुग़लों का आक्रमण दिल्ली पर हुआ और उन्होंने दिल्ली को खूब बर्वाद किया पर जब वह लौट गये तो अलाउद्दीन ने सिरी नगर बसाया और नगर की रक्षा के लिये दीवार खिचवाई। नगर में एक क़िला बनवाया। क़िले के भीतर अलाउद्दीन ने एक महल निर्माण किया। महल में एक बहुत बड़ा कमरा एक हज़ार स्तम्भों का बनाया गया जो समस्त भारतवर्ष में प्रसिद्ध था। आज इस बड़े कमरे का ठीक स्थान पता नहीं चलता शायद नगर की खोदाई के पश्चात् उसका पता लगेगा।

अलाउद्दीन एक बड़ा बहादुर तथा लड़ाकू राजा था। उसने राजपूतों को हराकर रणथम्भोर और चित्तौर पर अधिकार किया। दकन की विजय उसने मलिक काफ़ूर की सहायता से की थी। उसने विजय स्मारक बनाने तथा एक बड़ी मसजिद बनाने

का भी प्रयत्न किया था जिनका वर्णन पहले आ चुका है। उसके समय में दिल्ली समस्त भारत की राजधानी बन गया था।

सिरी के आगे चिराग़ दिल्ली के घेरे की दीवारें दिखाई पड़ती हैं। चिराग़दिल्ली अठारहवीं सदी में बनाया गया था। यहां पर एक साधु की समाधि है।

सिरी से कुतुब सड़क पर लौट आने पर हम चोर मीनार देखेंगे। इसका चोर मीनार इस कारण पड़ा कि चोरों को यहां फांसी दी जाती थी। इसी मीनार के समीप ही मुग़लों की एक बस्ती थी जब मुग़लों का आक्रमण अलाउद्दीन के समय में दिल्ली पर हुआ तो इस बस्ती के मुग़ल लोग उनसे मिल जाने का प्रयत्न किया। अलाउद्दीन बड़ा ही सख़्त तथा निर्दयी था उसने बस्ती के सभी मुग़लों को कत्ल कर दिया और उनके सिर मीनार पर लटकवा दिये जिससे लोग मुग़लों से मिलने का साहस न करें।

चोर मीनार के समीप ही एक ईदगाह की मसजिद है। शिलालेख से पता चलता है कि यह ईदगाह १४०४ ई० में बनी थी। दिल्ली के समीप वाली ईदगाह से इसकी तुलना की जाय तो पता चलेगा कि इसके बनाने वाले लोग बड़े ग़रीब थे। यहीं समीप ही नीली मसजिद है। यह मसजिद लोदी राजों के समय में बनी थी।

यहां पर चारों ओर पत्थर तथा दीवारें दिखाई पड़ती हैं जिससे सिद्ध होता है कि किसी समय में यह एक बड़ा ही सुन्दर नगर रहा होगा और चारों ओर सरदारों तथा अमीरों के बाग और महल रहे होंगे।

विजयमंडल

कुतुब सड़क पर हौज़ खास के मोड़ के कुछ आगे एक लम्बा चौकोर स्तम्भ सा दिखाई पड़ता है। इसी स्तम्भ से मिला हुआ एक भवन है। यही विजय मंडल है।

विजयमंडल मोहम्मद तुग़लक़ का महल है। अपने पिता फीरोज़ की मृत्यु के पश्चात् १३२५ ई० में मोहम्मद गद्दी पर बैठा। उसे तुग़लक़ाबाद नगर पसंद नहीं था इस कारण वह प्राचीन दिल्ली लौट आना चाहता था पर दिल्ली नगर बहुत बढ़ गया था। सिरी नगर अलाउद्दीन ने बनवाया था। सिरी और महरौली के मध्य बड़े बड़े भवन, वाटिकाएँ तथा दूकानें थीं। पर इनकी रक्षा के लिये दीवारें नहीं थीं। उस समय मुग़लों के आक्रमण का बड़ा भय था। इस कारण सिरी और महरौली के मध्य मोहम्मद ने अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया। इसलिये उसने सिरी से लाल कोट तक एक बड़ी दीवार बनाई और तीनों नगरों (सिरी, महरौली, लाल कोट) को मिलाकर एक कर दिया। इस नगर का नाम मोहम्मद ने जहाँपनाह रक्खा। जहाँपनाह का अर्थ संसार के आश्रय का स्थान है इस नगर के मध्य में उसने अपना महल और मसजिद बनवाया। यदि हम खिड़की गांव जाँय तो हमें नगर की दीवार का कुछ भाग देखने को मिल जावेगा। यहीं पर हमें उस बड़े सरोवर के चिन्ह भी मिलेंगे जिसे मोहम्मदशाह ने जहाँपनाह और तुग़लकाबाद के मध्य बनवाया था अब यह सरोवर नहीं है पर यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है।

विजयमंडल भवन के समीप कुतुब सड़क पर कुछ खोदाई हुई है जिससे मोहम्मद के स्नानगृह के चिन्ह मिले हैं। विजयमंडल के स्तम्भ पर चढ़ कर चारों ओर के दृश्य का निरीक्षण भली प्रकार हो सकता है। कहते हैं कि मोहम्मद इसी स्तम्भ की छत पर चढ़ कर अपनी सेना का निरीक्षण किया करता था।

स्तम्भ से जुड़े हुये भवन में एक बड़ा चबूतरा है। इस चबूतरे में स्तम्भों के चिन्ह हैं। मोहम्मद के समय में यह दीवान-खास था। यहीं बादशाह अपने मंत्रियों से सलाह करता था और दरबार करता था चबूतरा एक ओर सपाट ढालू चला गया है। इसी मार्ग होकर राजा का हाथी उसे लेकर आता जाता था। चबूतरे के पीछे राजा के कमरों के चिन्ह हैं। इन कमरों में दो में तहखानें हैं। यही राजा के खजाने थे क्योंकि जब यह खोदे गये थे तो दक्षिणी भारत के कुछ स्वर्ण मुद्रा इनमें प्राप्त हुये थे।

इन कमरों के दूसरी ओर समतल स्थान है जिसमें लगातार सूराख बने हैं। यह लकड़ी के स्तम्भों के चिन्ह हैं। अलाउद्दीन ने सिरी में एक हजार स्तम्भों का कमरा बनवाया था वैसे ही मोहम्मद ने भी यहां पर हजार स्तम्भों का दिवाने-आम बनवाया था।

विजयमंडल के समीप एक गांव है और गांव के समीप एक मसजिद है। यही मसजिद मोहम्मद के समय में जामा मसजिद थी। राजा इसमें नमाज पढ़ने जाता था। इस मसजिद पर बेगमपुर गांव के निवासियों का अधिकार था पर अब गांव वाले वहां से हटा दिये गये हैं।

दिल्ली-दर्शन

मोहम्मद को बहुतेरे लोगों ने पागल कहा है क्योंकि उसने दिल्ली बदल कर दौलताबाद को राजधानी बनाया था और फिर दौलताबाद को बदल कर दिल्ली राजधानी बनाया। इब्न बतूता अरबी यात्री मोहम्मद के समय में दिल्ली का क़ाज़ी कुछ समय तक रहा। वह लिखता है कि राजा का द्वार दो प्रकार के लोगों से कभी खाली नहीं रहता था। एक तो निर्धन लोग होते थे जो बादशाह के खुश होने पर अपार धन पाते थे और दूसरे वह जो बादशाह के क्रोध के शिकारी होते थे और फांसी पर लटका दिये जाते थे।

तुग़लक़ाबाद

जै शब्द तुग़लकाबाद का संकेत तुग़लक़वंश की ओर है। पीछे वर्णन हो चुका है कि फीरोज तुग़लक़ ने इसे बसाया था। यह नगर दिल्ली के समीप स्थित है। यहां पहुँचने के लिये तीन साधन हैं। एक तो यह है कि गाड़ी द्वारा तुग़लकाबाद ग्राम बदरपुर) स्टेशन तक लोग जाते हैं और फिर वहां से लगभग दो मील पैदल चलकर तुग़लकाबाद पहुँचते हैं। दूसरा मार्ग दिल्ली से मथुरा जाने वाली सड़क होकर है। बदरपुर गांव इसी सड़क पर स्थित है। बदरपुर से सीधे दाहिनी ओर से मार्ग तुग़लकाबाद को जाता है। तीसरा मार्ग कुतुब होकर जाता है। कुतुब के बाईं ओर से एक सीधा मार्ग तुग़लकाबाद को है।

अधिकांश लोग सड़क से जाते हैं और नगर का चक्कर

लगाते हैं। एक ओर से मथुरा वाली सड़क से जाते हैं और दिल्ली आने वाली सड़क से वापस आते हैं। यह मार्ग बड़ा ही मनोरंजक है। दिल्ली से मथुरा जो सड़क जाती है निज़ामउद्दीन साधु की समाधि उसी सड़क पर है। निज़ामउद्दीन की समाधि के आगे बाईं ओर ईंट तथा पत्थरों का मैदान जैसा दिखाई पड़ता है। इस मैदान में २० फुट ऊँचे मीनार कुछ दिखाई पड़ते हैं। यह मीनार दो मील के अन्तर पर स्थित है और कोसस्तम्भ कहलाते हैं। इन मीनारों को अकबर बादशाह ने ग्रैंडट्रङ्क सड़क पर आगरा से अम्बाला तक स्थापित कराये थे। बदरपुर गांव से एक मार्ग दाहिनी ओर घूमता है। इस मार्ग से बी० बी० और सी० आई-रेलवे पार करके तुग़लकाबाद पहुँचते हैं।

तुग़लक़ाबाद नगर को फीरोज़ तुग़लक़ ने बसाया था। वह तुग़लक वंश का प्रथम राजा था। तुग़लकाबाद किले की दीवारों को देखने से प्रतीत होता है कि वे बड़ी ही मज़बूत बनाई गई है। क़िलेके ऊपर देखने से चारों ओर का दृश्य दिखाई पड़ता है। पास ही संगमरमर का एक मक़बरा है यह लाल पत्थर का बना है पर इसके ऊपर का गुम्बद संगमरमर का है। यह मक़बरा ग़यासउद्दीन तुग़लक़ का है ग़यासउद्दीन के बग़ल में ही उसकी पत्नी मखदुयाई जहां और उसके पुत्र मोहम्मद की समाधियां हैं। यहां की भूमि बड़ी समतल है सड़क भूमि से कुछ ऊंची बनी है। एक ओर तुग़लकाबाद नगर और दूसरी ओर एक पहाड़ी है। पहाड़ी और तुग़लक़ाबाद के मध्य एक बड़ी

झील या सरोवर था। ग़यासउद्दीन की समाधि इसी सरोवर के मध्य में थी। समाधि चारों ओर एक मज़बूत दीवार से घिरी है। नगर से सरोवर तक पहले एक छोटी नदी थी इसी नदी से सरोवर में पानी आता था। बदरपुर गांव की ओर इस समतल मैदान में एक बांध बना है। इस बांध के कारण सरोवर का पानी बाहर नहीं जा सकता था। सामने पहाड़ी पर अदीलाबाद का क़िला है। यह क़िला सरोवर की रक्षा के लिये बनाया गया था। तुग़लक़ाबाद नगर लगभग साढ़े तीन मील के घेरे में स्थित है।

गयास उद्दीन ने मुग़लों से रक्षा करने के लिये ही तुग़लक़ाबाद नगर को बसाया था। उसने मुग़लों को परास्त किया और भारत वर्ष में शान्ति स्थापित की। वह बड़ा सख़्त तथा बहादुर सैनिक था। बंगाल विजय करके जब वह लौटा तो अफ़ग़ानपुर गांव में जाकर उसके पुत्र मोहम्मद ने उसका स्वागत किया था। मोहम्मद के चले जाने के पश्चात् हाथी फीरोज़ शाह के सामने लाये गये कहते हैं कि एक हाथी बारादरी के स्तम्भ से टकरा गया। स्तम्भ लकड़ी का था। टक्कर के कारण बारादरी गिर गई और फीरोज़ बादशाह उसी में दबकर मर गया।

सुरजकुंड

तुग़लक़ाबाद वाले समतल मैदान में जो बड़ा सरोवर था उसके पूर्व की ओर एक बांध है। यह बांध एक घाटी के आर पार बना है। घाटी के दूसरी ओर एक सुन्दर झील है। घाटी के दाहिनी ओर पहाड़ी पर सूर्यकुँड सरोवर स्थित है। दिल्ली से सूर्य कुंड का रास्ता बड़ा ही कठिन है। तुगलक़ाबाद तक जाने का वर्णन तो किया जा चुका है। बदरपुर गांव के समीप सड़क पर मन्दिर तथा धरमशाला है। यह मन्दिर तथा धरमशाला नीचे मैदान में हैं। यहीं पर सूर्यकुंड के लिये चिन्हस्तम्भ लगा है। धरमशाला में यात्री लोग रहते हैं और दाना पानी करते हैं। सूरजकुंड का मार्ग इतना दुर्गम है कि पानी मिलना भी कठिन है। खाने का प्रबंध तो केवल धरम शाला में ही हो सकता है। हिन्दुओं के अतिरिक्त दूसरे लोगों को खाना-पाना अपने साथ लेकर दिल्ली से चलना पड़ता है। हिन्दू यात्री धरमशाला में भोजन बनाते खाते हैं।

सूर्यकुंड तोमर राजपूत अनंगपाल वाली दिल्ली में है। अनंग-पाल दिल्ली का राजा था। ग्यारहवीं सदी में राज्य करता था। उस समय भारत पर महमूद गज़नवी के आक्रमण हुआ करते थे। आक्रमण के कारण ही पहाड़ी प्रदेश में यह नगर बसाया गया था। इसे तोमर बंश के राजा अनंगपाल ने बसाया था।

बदरपुर से आगे चलने पर एक छोटी पहाड़ी घाटी मिलती है जिसमें एक बांध और झील है। इसी घाटी में एक छोटी

नदी बहती है। प्राचीन समय में इसी झील तथा नदी से नगर को पानी पहुँचाया जाता था। पानी रोकने के लिये ही बांध बनवाया गया था। बांध की दाहिनी ओर से पहाड़ी के ऊपर चढ़ने का मार्ग है इस पहाड़ी के सिरे पर जब हम पहुँच जाते हैं तो ठीक हमारे नीचे सूर्यकुंड दिखलाई पड़ता है। सूर्यकुँड अर्धवृत्ताकार है। यह पक्का ईटं पत्थर और चून का बना है। परिध के चारों ओर सीढ़ियां बनी हैं। व्यास के ऊपर सूर्य मन्दिर है। सूर्य मन्दिर से नीचे कुंड में सीढ़ियां चली गयी हैं। सूर्यमन्दिर के नाम पर ही सरोवर का नाम सूर्यकुंड पड़ा है। कुंड में पानी जाने के लिये मार्ग बने हैं। पूर्व की ओर कुंड में हाथियों के उतरने के लिये एक मार्ग है। इसी मार्ग से हाथी सरोवर में पानी पीने और नहाने के लिये जाते आते थे।

दूसरी ओर पहाड़ी पर जाने से नगर की भीतों और खम्भों के चिन्ह मिलते हैं। नगर खंडहर के रूप में नग्न स्थित है। यहां पर केवल एक कुवां है जिससे प्रतीत होता है कि झील तथा नदी ही पानी के साधन थे और इसी कारण झील का पानी रोकने के लिये बांध बनाया गया था।

नगर की घाटी बड़ी सुन्दर है। यह लगभग एक मील लम्बी है। घाटी में नारियल के वृक्ष अधिक हैं। भूमि उपजाऊ है इसलिये लहलहाते खेतों का दृश्य बड़ा ही मनोहर लगता है। बांध से कुछ दूरी पर घाटी एक पहाड़ी संकरे मार्ग से होकर जाती है। यहां घाटी के दोनों ओर ऊंची चट्टानें हैं। यहीं पर गूजरों की एक बस्ती है। बस्ती के आगे पहाड़ी के आर-पार एक भीत (दीवार) है। इस भीत को भी महाराज अनंग-

पाल ने ही बनवाया था। इस भीत पर सरलता पूर्वक लोग चढ़-जाते हैं और टहलते हैं। बांध में पानी निकलने तथा रोकने के लिये द्वार बना है। यह द्वार सरलता पूर्वक खोला तथा बन्द किया जा सकता था। बांध के ऊपर चट्टान पर छतरी बनी है शायद राजा कभी-कभी यहां आकर बैठा करता था। घाटी के मैदान में अनंगपुर नाम की बस्ती है। यह बस्ती महाराज अनंगपाल के नाम पर ही बसी है।

यंत्र-मंत्र

यंत्र-मंत्र अथवा दिल्ली आवज़र्वेट्री दिल्ली की पार्लियामेंट स्ट्रीट (सड़क) पर स्थित है। यह आकाश-लोचन यंत्र-मंत्र महाराज जयपुर का है। इस पर महाराज जयपुर की ध्वजा-पताका फहरा रही है। यंत्र-मंत्र का निर्माण कार्य १७१० ई० में हुआ। इसे जयपुर महाराज जयसिंह ने बनवाया था। महाराज जयसिंह एक बड़े ज्योतिषी थे उन्हें नक्षत्रों और गृहों और तारागणों के सम्बंध में अधिक ज्ञान प्राप्त करने का बड़ा चाव था। महाराज ने हिन्दू, मुसलिम तथा योरुपीय ज्योतिष-शास्त्र की पुस्तकों का अध्ययन किया और उसके पश्चात् यह यंत्र-मंत्र बनाने का निश्चय किया। नक्षत्र शाला के यंत्र इतने बड़े और भारी हैं कि न तो वह हिल-डुल सकते हैं और न गणना में ही किसी प्रकार की त्रुटि हो सकती है। इस नक्षत्र-शाला को बनाने के पश्चात् महाराज जयसिंह ने सात वर्ष तक नक्षत्रों और गृहों

की चाल का अध्ययन यंत्रों की सहायता से किया ताकि वह तारा-गणों नक्षत्रों और गृहों की एक नई तालिका बनावें। फिर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ और उन्होंने जयपुर, बनारस, उज्जैन और मथुरा आदि स्थानों में नक्षत्र-शालाएं बनवाई। इनमें भी उन्होंने अपने अध्ययन तथा प्रयोग किये। जब सभी स्थानों की गणनाओं का परिणाम एक ही हुआ तो उन्हें संतोष हुआ। इस प्रकार पंडितों और ध्योतिषियों को ज्योतिष गणना में सहायता मिल गई। इन्हीं स्थानों की सहायता से पंचांग (पत्रा,यंत्री) तयार किये जाते हैं।

दिल्ली नक्षत्रशाला में छः यंत्र हैं। (१) समर्थ (२) जय प्रकाश (३) राम यंत्र (४) मिश्र यंत्र (५) नापक यंत्र (६) दो स्तम्भ।

समरथ यंत्र सब से बड़ा यंत्र है। यह एक बड़ी सूर्य घड़ी (धूपघड़ी) है। इसे ज्योतिषी लोग धूपघड़ी का कांटा कहते हैं। यह समकोण त्रिभुजाकार है। यह पृथ्वी पर इस प्रकार स्थापित किया गया है कि इसका कर्ण पृथ्वी के साथ उतने अंश का कोण बनाता है जितने अंश पर दिल्ली की अक्षांश (२८°, ३'४) बनाती है। इस प्रकार कर्ण सदैव उत्तरी ध्रुव की ओर संकेत करता रहता है और पृथ्वी की कीली के समानान्तर रहता है। इस कर्ण पर सीढ़ियां जिससे लोग चढ़कर अंकों का अध्ययन करते हैं। धूपघड़ी के दोनों ओर ईंट के बने हुये दो छोटे यंत्र हैं। यह वृत के चौथाई रूपाकार हैं इन्हीं पर धूपघड़ी की छाया पड़ती है और सूर्य-समय बतलाती है। इनपर कोई भी व्यक्ति समय पढ़ सकता है। इनके उत्तर की ओर जो चिन्ह हैं उनसे

घंटा, मिनट और सिकंड का ज्ञान होता है दक्षिणी चिन्हों, घड़ी, पल और बिपल का ज्ञान होता है। इस यंत्र का धूप में अध्ययन करने से पता चलता है कि किस प्रकार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

जयप्रकाश—यह एक पेचीला यंत्र है। इसे स्वयं महाराज जयसिंह ने बनाया है। इसके दो भाग हैं इन अर्ध भागों का रूप कटोरों का सा है। इसका अर्थ यह है कि आकाश के दो भाग कर दिये गये हैं और प्रत्येक कटोरा आधे भाग का सम्बोधन करता है। आवश्यक बिन्दु तथा वृत इस पर खिंचे गये हैं। बीच में एक लोह-स्तम्भ है। स्तम्भ में चार खूंटियां हैं जो चारों दिशाओं की ओर स्थित हैं। पूर्वी गोलार्ध के दक्षिणी भाग के सामने भीतके निचले भाग में एक छिद्र है। इस छिद्र होकर वर्ष भर में केवल एक दिन (२१ मार्च) सूर्य का प्रकाश पड़ता है। दीवार के अंक उस दिन बतलाते हैं कि जब रात दिन बराबर होता है तो सूर्य का स्थान आकाश में कहां रहता है।

जयप्रकाश यंत्र के दक्षिण रामयंत्र स्थित है। इसमें दो गोलाकार यंत्र हैं यह भीत की भांति स्थित हैं। प्रत्येक के केन्द्र में स्तम्भ है। इनसे अंक्षाशों तथा देशान्तरों का ज्ञान होता है।

मिश्रयंत्र—एक ही भवन में पांच यंत्र मिश्रित हैं इसी से इसे मिश्रयंत्र कहते हैं। इनमें से नियम चक्रयंत्र समरथ यंत्र की भांति धूपघड़ी सा है। इसके दोनों ओर दो अर्धवृताकार यंत्र हैं ग्रीविच (इंगलैंड) जूरिच (स्विटज़रलैंड) नाट्‌की (जापान) सेरिच् (पिकद्वीप) आदि स्थानों की भांति भारत का यह यंत्र

(गोले) भी हैं जहां से देशांतरों की गणना होती है। इस वृतों के द्वारा जब दिल्ली में दोपहर होती है तो ग्रीविच, जूरिच नाटकी सेरिच्यू आदि स्थानों का समय जाना जा सकता है। दूसरे यंत्र दूसरे कार्यों के लिये हैं।

मिश्र यंत्र के दक्षिण की ओर के दोनों स्तम्भ साल का सब से बड़ा और सबसे छोटा दिन (१ जून और २१ दिसम्बर) बतलाते हैं। दिसम्बर में एक स्तम्भ की पूर्ण छाया दूसरे स्तम्भ पर पड़ती है। जून में इसकी छाया दूसरे पर बिलकुल नहीं पड़ती है।

समरथ यंत्र चौकोर है और २० फुट गहराई में बनाया गया है। उत्तर से दक्षिण इसकी लम्बाई १२० फुट और पूर्व से पश्चिम १२५ फुट है। इसके कुछ भाग की नीव पृथ्वी के धरा-तल से नीचे है। ऊँचाई ६० फुट से अधिक है। समकोण त्रिभुज की बड़ी भुजा ११३½ फुट, छोटी ६०-३ फुट और कर्ण १२८ फुट है। राम यंत्र के वृतों का भीतरी अर्ध व्यास २४ फुट ६॥ इंच का है और केन्द्रीय स्तम्भ का व्यास ५ फुट ३॥ इंच है।

मिश्रयंत्र पांच भिन्न यंत्रों का मिश्रण है। इसमें नियत, समरथ, आग्र, दक्षिणी ऋति और करकरसी वलप आदि हैं। समरथ यंत्र के पश्चिम की ओर एक छोटा सा भवन है जिसमें एक चौकीदार रहता है इसी भवन के ऊपर राज ध्वजा फहराती रहती है।

नई दिल्ली

आधुनिक दिल्ली नगर बिलकुल आधुनिक ढंग का बना है। इस नगर का ढांचा सर एडविन लिटन और सरहरबर्ट दो प्रसिद्ध शिल्पकारों ने बनाया था।

नई दिल्ली में वाइसराय भवन सर्वोत्तम है। यह यूनानी कला का बना है। यूनानी कला का प्रयोग दिल्ली में इस कारण किया गया है कि यूनान भी भारतवर्ष की भांति ही गर्म है। गर्मी में काफी गरमी पड़ती है और जाड़े में जाड़ा भी काफी पड़ जाता है। वाइसराय भवन के गुम्बद गोले हैं। भवन में स्तम्भों और गुम्बदों का प्रयोग अधिक है मेहराबों का प्रयोग कम किया गया है। भवन के भीतरी भाग भारतीय कला के अनुसार बनाये गये हैं। वाइसराय और सेक्रेटैरियट भवन के स्तम्भ वैसी ही कला के हैं जैसे कि सारनाथ में अशोक ने बनवाये थे। पत्थर की जालियों, हाथी, घोड़े की मूर्तियों और दूसरी तसवीरों का प्रयोग भवनों के निर्माण में किया गया है। वाइसराय भवन बनाने के लिये आगरा और जयपुर के कारीगर बुलाये गये थे। दिल्ली नगर में एक खास बात यह है कि प्रत्येक प्रधान सड़क के सिरों पर प्रधान भवन तथा स्थान बने हैं जैसे कि किंग्सवे सड़क के एक सिरे पर वाइसराय भवन और दूसरे पर पुराना क़िला है। इसी प्रकार प्रत्येक प्रधान सड़क का हाल है।

लेडी हार्डिंज सराय, कनाटप्लेस, लेडी हार्डिंज मेडीकल

कालेज, पार्लियामेंट स्ट्रीट आदि देखने योग्य हैं असेम्बली भवन, स्टेट काउन्सिल भवन चैम्बर आफ प्रिंसेज देखने योग्य हैं। यह स्थान बड़े सुन्दर बने हैं। इनके चारों ओर पत्थर की चहार दीवारी उसी कला की है जैसी की रांची (अशोक की बनाई) की है। इन भवनों की भीतरी सजावट बड़ी मनोहर है। भवनों के बाहर पत्थर के लैम्प स्तम्भ हैं जो मुग़ल कला के अनुसार बनाये गये हैं।

सेक्रेटैरियट भवन की छतरियां मुग़ल कला के अनुसार बनी है पर हाथी तथा आभूषणों की तसवीरों और मूर्तियों से हिन्दू कला का प्रदर्शन होता है। दोनों भवनों के मध्य में स्तम्भ बने हैं। इनके भीतर लोग जाकर भीतरी भाग की सुन्दरता और आंगन की सजावट देखते हैं।

वाइसराय भवन के सामने जो स्तम्भ है उसे महाराज जयपुर ने दिया था। वाइसराय भवन से पीछे लौटने पर कनाट प्लेस है। रिगल सिनेमा, विलिंगडन क्रेसेंट तालकोट्रा बाग आदि स्थान देखने योग्य हैं। वाइसराय भवन का चक्कर काटने के पश्चात् कमांडर इनचीफ (प्रधान सेनापति) भवन है। इसके बाहर भारतीय सेना का वारमेमोरियल (युद्ध स्मृति) है।

औरंगजेब सड़क और पृथ्वीराज सड़क के दोनों ओर सुन्दर भवन स्थित हैं। पृथ्वीराज सड़क पर वारमेमोरियल मेहराब है। यहीं पर भारतीय नरेशों (हैदराबाद, बड़ौदा, बीकानेर, जयपुर, पटियाला आदि) के महल बने हुये हैं। कर्जन सड़क पर ट्रावनकोर महाराज का महल है। यह बहुत बड़ा नहीं

है पर बड़ा ही सुन्दर महल है। हार्डिंज अवेन्यू पर शेखअब्दुल नबी की समाधि तथा मसजिद है। नबी अकबर के बड़े विरोधी थे। कहते हैं कि वह अकबर के इतने बड़े विरोधी थे कि जब वह मक्का गये थे और मक्का में उन्होंने सुना कि अकबर के [illegible] मोहम्मद हकीम ने बलवा कर दिया तो नबी हकीम की [illegible]यता करने और अकबर का विरोध करने के लिये, मक्का से लौट आये। पर सिंध पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि बलवा शांत हो गया। अकबर ने उन्हें कैद कर लिया था। कुछ दिन पश्चात वह मार डाले गये थे।